राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष-47 ■ अंक-04 ■ अगस्त 2025 ■ ₹10 ■ पृष्ठ-36

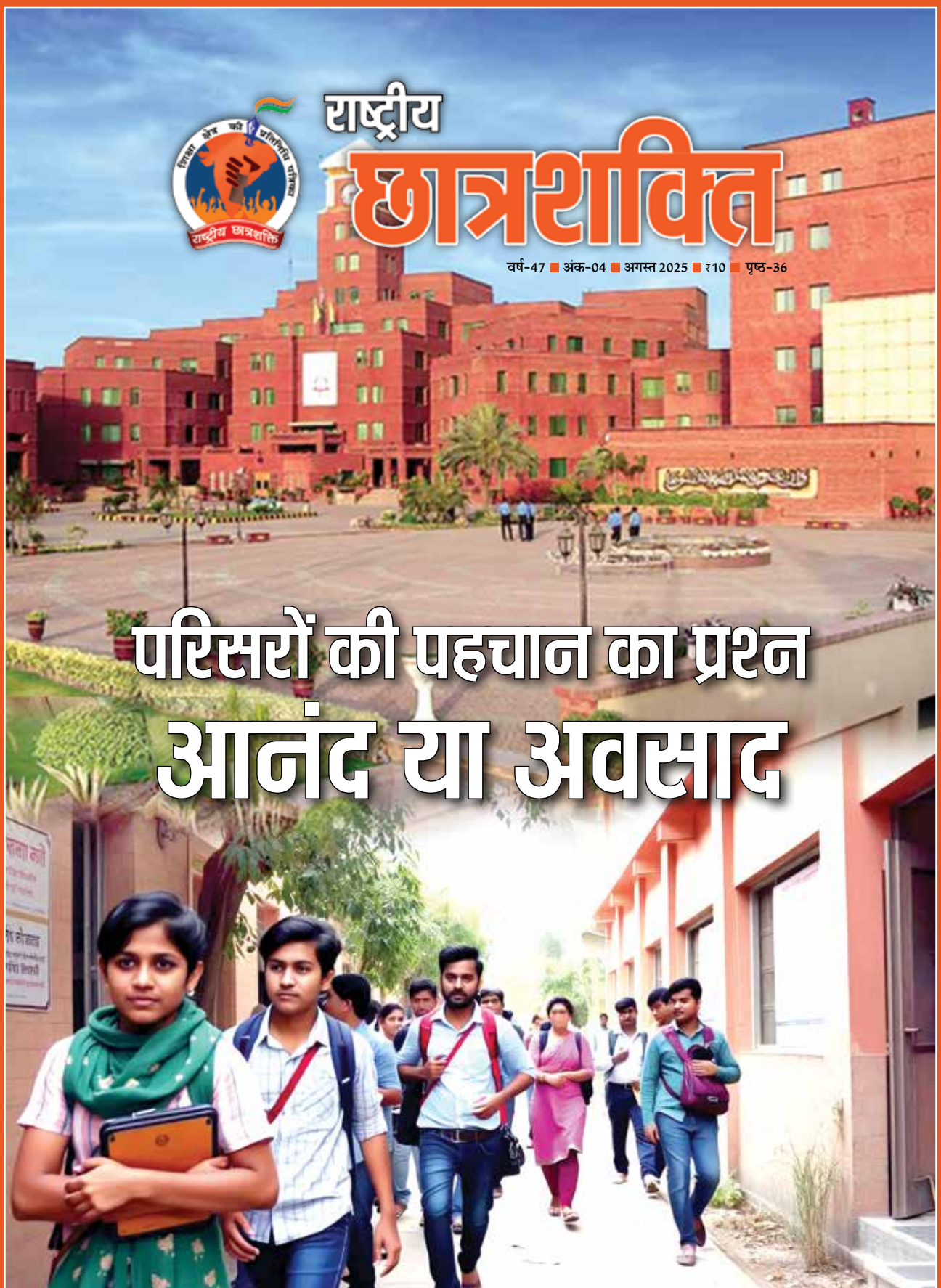

परिसरों की पहचान का प्रश्न

आनंद या अवसाद

वर्धा : राष्ट्रीय कला मंच की दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए अभाविप राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान, संस्कार भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री अभिजीत गोखले, अभाविप राष्ट्रीय मंत्री अंकित शुक्ला एवं अन्य।

नासिक : महाराष्ट्र आरोग्य विज्ञान विश्वविद्यालय के छात्र परिषद चुनाव में मिली जीत के बाद प्रसन्नता व्यक्त करते हुए अभाविप के उम्मीवार एवं कार्यकर्ता।

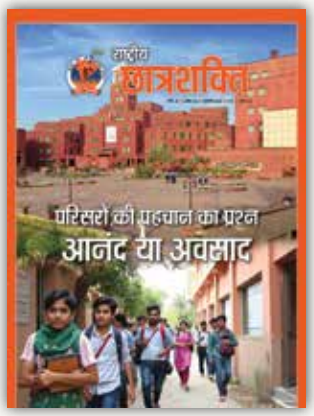

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष-47, अंक-04
अगस्त 2025

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक मण्डल
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नई दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित। **संपादक** *पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए जिम्मेवार।

अबकी बार

05 **THE ALARMING TREND OF INCREASING SUICIDAL TENDENCIES AMONG YOUTH IN INDIA : ISSUES AND CHALLENGES**

Swami Vivekananda called for a powerful, vibrant young population as a driver of social change and nation rebuilding exemplifying his trust in...

संपादकीय	04
सौम्याश्री की आत्महत्या से उपजे प्रश्न	09
मानसिक प्रताड़ना से क्षुब्ध शारदा विवि की छात्रा ने की आत्महत्या	10
सही निर्णय लिया जाता तो नहीं जाती सौम्याश्री की जान : अभाविप	11
The Sanyasi Who Saved the Constitution Story of Kesavananda Bharati and the Battle for Bharat's Soul	12
छात्रों की मांगों को दिल्ली विश्वविद्यालय प्रशासन ने किया स्वीकार	15
देशभर में मनाया गया अभाविप का 77वां स्थापना दिवस	16
घुसपैठियों के विरुद्ध कार्रवाई का अभाविप ने किया समर्थन	18
सिदो-कान्हू ने जगाया आत्मगौरव एवं स्वराज का संकल्प : अभाविप	19
Flames Across the Crescent : How the Israel-Iran-Palestine Conflict Could Redefine Global Stability	20
पहला सहकारी विश्वविद्यालय गुजरात में	23
समृद्ध धरोहर हैं भारत की सांस्कृतिक विरासत : आशीष चौहान	24
एसएयू में सामने आया वामपंथी षड्यंत्र : अभाविप	25
'शोधशाला' में अनुसंधान की भारतीय दृष्टि पर मंथन	26
आरोग्य विज्ञान विश्वविद्यालय छात्र परिषद चुनाव में अभाविप को मिली शानदार विजय	27
युवा भारत के लिए प्रेरणास्रोत बने ग्रुप-कैप्टन शुभांशु शुक्ला	28
विश्व धरोहर बने मराठा शौर्य के प्रतीक बारह किले	30
प्रमिला ताई मेढ़े ने मरणोपरांत पूरा किया देहदान का संकल्प	31
सशक्त युवा-समृद्ध कृषि से विकसित भारत का निर्माण	32
अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की एक और सफल उड़ान	33
देश के तीन सौ विश्वविद्यालयों में होगा अभाविप का विश्वविद्यालय प्रवास	34

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

भारत एक अनवरत् यात्रा है। 15 अगस्त 1947 इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण मील-पत्थर है। उन सपनों और संकल्पों को दोहराने का दिन है, जो हमने स्वाधीनता आन्दोलन में लिए थे। गांधी जी का ग्राम-स्वराज, विनोबा जी का सर्वोदय और हेडगेवार जी की परमवैभव की संकल्पना, सब एक ही लक्ष्य की ओर संकेत करते थे-राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विश्व में उसकी पुनर्प्रतिष्ठा। अंतर तो साधनों का था, साधना का था।

स्वाधीन भारत में जब सत्ता का सुख मिला तो साधनों की शुचिता के प्रति आग्रह घटता गया। लक्ष्य को पाने के लिए आवश्यक साधना करने के लिए वह वर्ग प्रस्तुत नहीं था, जो कैसे भी करके सत्ता प्रतिष्ठान के आस-पास भी जा पहुंचा था। नायकों के दुर्लक्ष्य होने के कारण अनुगामी भी या तो विपथगामी हो गए अथवा निराश और निष्क्रिय होकर मौन साध गए। लेकिन यह स्थिति उनकी भी थी, जो स्वाधीनता संग्राम में लड़ते-लड़ते थक चुकी थी और अब पुनः जेल जाने को तैयार नहीं थी। नेतृत्व बूढ़ा हुआ था। पर तरुणाई ने तो अभी-अभी आंखें खोली थीं। दुनिया को देखने-समझने की कोशिश ही कर रही थी। शरीर में ऊर्जा का अथाह भंड़ार था और मन में सब कुछ बदल देने का संकल्प। आवश्यकता थी इसे गढ़ने की, ध्येय के साथ समन्वित करने की, दिशा देने की और नियोजित करने की। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की प्रथम पीढ़ी ने यह काम स्वीकार किया और कुछ ही दशकों में इसे विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन के रूप में लाकर खड़ा किया। आज के नागरिक के रूप में प्रत्येक राष्ट्रीय प्रश्न पर उसकी सुनिश्चित राय थी और उसे क्रियान्वयन तक लाने की उसकी सन्नद्धता भी।

वैश्विक घटनाक्रम बड़ी तेजी से घटित हो रहा है। द्वितीय विश्वयुद्ध और उसके कारण कारण लंबे समय तक चले शीतयुद्ध की परछाई से निकल कर एक नई विश्वव्यवस्था आकार लेती दिख रही है।

इस यात्रा में राष्ट्रजीवन में ऐसे अनेक पड़ाव आए, जब अभाविप की परीक्षा हुई और वह उसमें सफल रही। आपातकाल ऐसा ही अवसर था। दृढ़ संकल्प और युवाओं के सामर्थ्य के बल पर राष्ट्र अपनी रोटी, कपड़ा, मकान की प्रारंभिक चुनौतियों को एक सीमा तक पार कर चुका है। अगले चरण के रूप में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के प्रश्न का समाधान होना है। विशेषतः शिक्षा का क्षेत्र अभाविप का अपना कार्यक्षेत्र है, जहां उसे अपनी ऊर्जा का सम्पूर्ण विनियोग करना है।

स्वाधीनता के बाद भारतीय शिक्षा व्यवस्था में जो परिवर्तन लिए जाने अपेक्षित थे, वह नहीं हो सके। उन कारणों की पड़ताल अलग से एक विषय हो सकता है, लेकिन आज का यथार्थ यह है कि अनेक प्रयास के बाद भी उसे पूर्णतः भारतीय स्वरूप देने का लक्ष्य अभी अधूरा है। इसके नकारात्मक परिणाम परिसरों में सामने आते रहते हैं। पिछले दिनों अनेक परिसरों में छात्र-छात्राओं द्वारा की गई आत्महत्या ने शिक्षा जगत में बेचैनी उत्पन्न की है। प्रश्न खड़े करना तो महत्वपूर्ण है ही, उससे ज्यादा आवश्यक इसका रचनात्मक समाधान खोजना है। अभाविप ने इसको गंभीरता से लेते हुए इस पर मंथन प्रारंभ किया है, जिसके कुछ अंश इस अंक में संकलित हैं।

वैश्विक घटनाक्रम बड़ी तेजी से घटित हो रहा है। द्वितीय विश्वयुद्ध और उसके कारण लंबे समय तक चले शीतयुद्ध की परछाईं से निकल कर एक नई विश्वव्यवस्था आकार लेती दिख रही है। हिंसा और अराजकता इसका एक अनपेक्षित किन्तु अनिवार्य अंग है। पश्चिम एशिया में जारी घटनाक्रम को इसी संदर्भ में समझना चाहिए। परिस्थिति का विश्लेषण करता एक लेख भी भीतर के पृष्ठों पर है।

राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस के कार्यक्रमों सहित अन्य संगठनात्मक और आंदोलनात्मक गतिविधियों को सहेजे यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामना सहित,

आपका
संपादक

The Alarming Trend of Increasing Suicidal Tendencies Among Youth in India : Issues and Challenges

■ **Manu Sharma Kataria**

Swami Vivekananda called for a powerful, vibrant young population as a driver of social change and nation rebuilding exemplifying his trust in youth power of our nation. However, India, with its dynamic youth population, stands at a critical crossroads today. While the country celebrates its demographic dividend, it is also facing a silent crisis that threatens its future, the rising cases of student and youth suicides. This issue is highly complex which reflects a growing mental health emergency and calls for an urgent and coordinated action from the government, civil society groups and educational institutions. According to the National Crime Records Bureau (NCRB) 2023 report, over 13,000 students died by suicide in the year 2022 alone which makes it an average of 36 student suicides per day. As per NCRB data, trend in suicide cases among student have seen upward surge in the last two decades as cases rose from 5,425 in 2001 to 13,044 in 2022. Among all age groups, the 15–29 years category accounts for nearly one-third of total suicides in the country. This shocking trend is further accentuated in states such as Maharashtra, Madhya Pradesh, Tamil Nadu and Karnataka, which consistently report the highest numbers of such incidents which underscores a deepening

mental health crisis. It is evident that Indias potential for growth based on vision of Viksit Bharat@2047 is laid on the promising will power and strength of youngsters from this age group, which requires concrete strategies that empower efforts in channelising power of young students from destructive approach to constructive mindset.

There are many reasons for rising cases of suicides in India, of which mental health crises remain at top. As per The Indian Council of Medical Research (ICMR), more than 14% of Indian youth suffer from mental health issues, while only about 10% receive professional support. This vast treatment gap is a reflection of the deeply rooted stigma around mental health, lack of awareness, and inadequate institutional support. Also, in recent directions issued by Supreme court of India on 'mental health crisis', it is reiterated that alarming rise in suicidal tendencies is attributed to the psychological pressure of performance metrics, academic rat race, anxiety over rankings and institutional insensitivity and ignorance. The Court has maintained that the culture of silence towards the issues of mental health, isolation and anxiety exacerbates vulnerability of a student to commit suicides. These directions were based on the hearing of a recent case of a suicide by medical student in Andhra Pradesh.

Several other recent cases include, suicide by third year nursing student in Kasargod district of Kerala due to alleged mental harassment in the hostel, suicide by MBBS student at a dental college in Udaipur, attempt by class 10th girl to jump from fourth floor at a school in Ahmedabad, suicide by 22 year old architect student in Karnataka, suicide of BDS second year student in hostel room of a university in Uttar Pradesh and gruesome case of self-immolation of a college girl student in Balasore, Odisha due to sexual harassment, mental torture and unresponsive attitude of college administration.

These cases not only reflect the issues in educational institutions, systemic failure but also rising crises of mental health among students to deal with such situations in a composed and confident manner. Such issues often stem from a combination of psychological, social, academic and economic stressors which includes pressure in academics and higher expectations from parents and institutions, pressure to perform in competitive entrance exams and fear of failure leading to anxiety. Also, feeling of uncertainty about futureleads to feelings of helplessness and emotional instability.

Along with this, reasons such as absence of mental health advisors in institutions, lack of grievance redressal mechanism or unbiased Internal complaint committee, delay in reporting cases, non-availability of anti-harassment measures and support systems, rising societal expectations, comparisons and lack of communication with parents and peer group acts as a multiplier to an environment that suppress voices and subjugates life to rising pressure and suffocation, further aggravating emotional distress leading to loss of life.

Recognizing gravity of issue, government of India have launched several initiatives aimed at addressing mental health and suicide prevention which includes MANODARPAN initiative wherein Ministry of Education offers online counselling, helpline number and psychological support to teachers, families and students. Also, initiatives like Tele-MANAS launched in 2022 provide access to easy counselling services 24x7. With this, UGC has also issued advisories to higher education institutions to offer conducive environment, accelerate initiatives aimed at physical fitness and ensure emotional well-being of students. Institutions such as IIT-Guwahati, IIT-Madras, IIT-Delhi have also initiated conducting workshops aiming at stress management and building resilience. With these important initiatives in the right direction, it is required that educational institutions take a proactive

step ahead in developing academic spaces into more free, vibrant, open and student friendly campuses.

As highlighted above; to deal with the challenges in this arena, we need multi-faceted and holistic approach wherein role of student organisation working for students and run by students become pivotal. Akhil Bhartiya Vidyarthi Parishad as a world's largest student organisation act as a group that voice student concerns and strengthens democracy. It not only influences educational policies and practices in India, but also stands as a dynamic force of young students driving with enthusiasm to rectify loopholes and to rebuild a resilient, developed nation with an aim to give positive solution to current problems. In the wake of current crisis, to highlight key initiatives undertaken by ABVP in promoting conducive, constructive, welfarist, inclusive and student friendly environment for youngsters in educational institutions becomes indispensable.

One of the key initiatives is "Parisar (Campus) Chalo Abhiyan" aiming at empowering the future of education. With its Parisar Chalo Abhiyan, ABVP is committed to give its active support in bringing solutions to existing problems in the context of continuous decline in the quality of education and limited opportunities for overall development. The campus is considered to be the centre of student's development and holistic grooming. On campuses, Dialogue plays a major role in imparting important lessons in life along with a respectful and friendly environment. The teacher is considered pivotal as they shape the future and dedicate themselves towards upliftment of society. ABVP firmly believes in the Indian scriptures that knowledge is acquired through the words, touch, company and most importantly through compliance of the Guru, which reiterates importance of personal observation and free and open communication as key medium of learning.

Since late 2019, due to the closure of campuses during the Covid-19, there has been a lack of dialogue. As a consequence, the campuses looked lifeless, students lacked guidance and for a long time, social and inter-personal relationships that existed were cut off and exchange of ideas subsided leading to isolation.

Consequently, students became introverts, hesitant and opted to stay online leading to excess use of technology as an easy substitute for human conversation. This trend was further exacerbated by remote learning which led to a decreased interest in physical classes. In recent studies on the after effects of Covid-19, it is found that students are facing anxiety, pressure, identity crisis and academic stress on campuses.

It certainly is a barrier in the all-round development of students. In view of such a situation, Akhil Bhartiya Vidyarthi Parishad came forward with a solution to explain the importance of campus as a critical space for learning and holistic development, as a space that empowers students to contribute towards the welfare of the society. Furthermore, ABVP made sure to put forward different platforms and forums for students to encourage engagement, participation, communication and polish leadership skills. Student for Seva (SFS) to engage students in social service, Rashtriya kala manch (RKM) to ensure participation in cultural activities, student for development (SFD) to encourage students to participate as a change maker in activities aiming at reversing climate change and building a club of eco-friendly students.

It believes in the potential of students as key players in the society, as evident in saying of ABVP, 'Student's power, Nation's power' and motivate students to participate in different forums, made to suit their interest in a way that aligns with their vision to offer path-breaking and inspiring solution to problems that exist in fields such as social service, environmental protection and nutrition, sports, health, technology, technical,

international relations, literature, art, music, politics etc. This entire Abhiyan aims at involving students in campuses and upholds the importance of debate, dialogue, student union elections and cultural programmes through which inter-personal interaction and community involvement is encouraged.

Activities undertaken by ABVP in campuses develop essential life skills, promote collectivism, mutuality, leadership ability, creativity and inclusivity. With this aim to bring meaningful change nationwide, ABVP started its "Parisar Chalo Abhiyan" in university and college campuses to make them free from all forms of prejudices that may hinder the path of progress for a student. While all other organizations are busy counting the shortcomings, ABVP is the only organization that continues to work throughout the year with a solution in the form of this Abhiyan.

In another important step towards Vibrant campuses, ABVP in its National conference, 2023 held in Delhi, passed a resolution for effective measures required for quality education and vibrant campus. In its resolution, ABVP highlighted key challenges in path of making educational institutions more vibrant. It noted lack of adequate infrastructure, conducive environment, job-oriented curriculum and innovative teaching methods and practices in bringing about a comprehensive change in Indian higher education sector. ABVP laid down its vision to make education affordable, accessible, affordable, qualitative and skill oriented. It highlighted a need for a blend of theory and practical based curriculum that equip students to face real life challenges and impart values that build strong and confident personality.

Resolution also welcomed technological changes in education sector with an idea to leverage opportunities that innovation offers. It is of the belief that campuses be made a centre of research, innovation and students should be provided with an opportunity to participate in survey, group discussions, experiments, internship and community projects. For an all-encompassing development of student, different opportunities and activities in campuses should be promoted. Practice of conducting regular elections in campuses should be continued through a culture of democratic representation.

The resolution call upon educational community of the country including student representatives to take a lead in making campus joyful, student friendly, interactive and meaningful. Additionally, ABVP in its National executive committee (NEC) meeting held in Pune called for a Pan India initiative to execute its vision named 'Happy and Meaningful Student Life'. In NEC meeting, ABVP also passed resolutions to reaffirm its stand on the necessity to ensure quality of education in state universities, active role of students in debunking Anti-India narratives and making campuses more approachable, happy and meaningful for students to encourage participation in college and universities.

Thus, it is required that we stand united in every action individually as well as collectively that helps bring a solution to this drastic trend in rise of suicidal tendencies among students. It becomes our responsibility to build a positive and peaceful environment for students that foster a spirit of togetherness, cooperation, hope and strength at home and in educational institutes. It is high time that we remind our young generations to re-visit vision of Swami Vivekanand for youth. Swami Vivekananda emphasized youth's role and potential for transformational change, as well as their obligation to elevate society. He firmly believed that the youth, with their energy and intellect, held the key to India's future and encouraged them to embrace strength, fearlessness, and a sense of duty towards society. ■

[Author is All India Girls works In-Charge of ABVP]

सौम्याश्री की आत्महत्या से उपजे प्रश्न

■ गोविन्द नायक

ओडिशा के बालेश्वर नगर में गत 12 जुलाई को महाविद्यालय की एक छात्रा ने प्रधानाचार्य कार्यालय के सामने स्वयं को आग लगा ली। बुरी तरह जल जाने के कारण तीन दिन बाद छात्रा की भुवनेश्वर स्थित एम्स अस्पताल में दुखद मृत्यु हो गई। सौम्याश्री नामक छात्रा ने अपनी असमय मृत्यु के साथ ही अनेक प्रश्न समाज के सामने खड़े कर दिए हैं।

इन प्रश्नों में पहला प्रश्न शिक्षक एवं छात्र-छात्रा संपर्क से जुड़ा है। दूसरा प्रश्न शिक्षा परिसर के वातावरण से, तीसरा प्रश्न साथ पढ़ने वाले दोस्त और सहपाठियों से, चौथा प्रश्न भारत की न्याय व्यवस्था से, पांचवां प्रश्न अभिभावक एवं परिवार से और छठा प्रश्न समाज की नैतिकता से जुड़ा हुआ है।

बाल्यकाल में सभी स्कूल में जाते थे। अनेक विद्यार्थियों के माता-पिता स्कूल आकर शिक्षक से कहते थे कि मास्टर जी, मेरे बेटे या बेटी को मनुष्य बना दीजिए। अगर वह आपकी बात नहीं माने तो दंड दीजिए। रोजाना मास्टर जी स्कूल समाप्ति के बाद किसी न किसी छात्र के पिता-माता से मिलने पहुंच जाते थे। मुझे याद है, जब मैंने कालेज में दाखिला लिया, उस समय कालेज में पांच हज़ार से अधिक छात्र पढ़ते थे। वहां 25 छात्रों के लिए एक प्राध्यापक को यह जिम्मेदारी दी गई थी कि वह उनसे बात करे और उनकी असुविधा दूर करने का प्रयास करे। उस समय मोबाइल फोन नहीं था। इसके बाद भी प्रत्येक माह घर पर रिपोर्ट कार्ड कालेज से पोस्ट कार्ड के मध्यम से पहुंच जाता था। इस रिपोर्ट में शिक्षा के साथ ही कितनी कक्षाओं में विद्यार्थी अनुपस्थित रहा, व्यवहार कैसा रहा आदि की जानकारी घरवालों को दी जाती थी।

जो जानकारी सामने आई, उससे पता चलता है कि सौम्याश्री ने अपने ही विभाग के अध्यक्ष के बारे में शिकायत की थी। एक दिन उसने अपने विभागाध्यक्ष को बताया कि वह स्कूल में ओडिया भाषा में पढ़ रही थी। इसलिए आपकी अंग्रेजी समझना मुश्किल हो रहा है। इस पर विभागाध्यक्ष ने कहा कि मैं सब कुछ देख लूंगा, बस आपसे एक फेवर चाहिए। सौम्याश्री ने फेवर के बारे में पूछा तो विभागाध्यक्ष ने कहा कि तुम इतनी बड़ी हो गई हो, फेवर नहीं जानती हो?

सौम्याश्री पढ़ाई के साथ-साथ छात्राओं को आत्मरक्षा कौशल सिखाती थी। अभिनय, पेंटिंग जैसी कलाओं में माहिर थी। यह उसके प्राध्यापक को अच्छा नहीं लगता था। इसीलिए उन्होंने सौम्याश्री को बार-बार मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। महाविद्यालय के प्राचार्य को भी सौम्याश्री ने अपनी समस्या बताई, लेकिन उन्होंने भी उसको समझाना नहीं चाहा। कालेज का अंतरिम अभियोग प्रकोष्ठ भी सौम्याश्री को न्याय नहीं दे सका। अपने सभी शिक्षकों से उम्मीद हारने के बाद शायद सौम्याश्री ने दुखद कदम उठाया और अपने प्राण दे दिए।

केवल सौम्याश्री ही नहीं, नोएडा के शारदा विश्वविद्यालय एवं उदयपुर के पैसिफिक कालेज एंड हॉस्पिटल में डेंटल छात्रा ने भी अपनी प्राध्यापक एवं वहां के स्टाफ के विरुद्ध गंभीर आरोप लगाकर आत्महत्या कर ली। अगर विद्यार्थी और शिक्षक के बीच में पिता-पुत्री जैसे संबंध नहीं रहे और गुरु-शिष्य परम्परा में अविश्वास पैदा हो जाएगा तो क्या होगा? दोनों घटनाएं इसका साक्षात उदाहरण हैं। इस गंभीर समस्या के विषय में शिक्षकों के साथ ही समाज को भी गंभीरता के साथ सोचना एवं विचार करना होगा क्योंकि माता-पिता के बाद समाज में शिक्षक को स्थान दिया जाता है।

इसी तरह बेंगलूरु में आर्किटेक्चर के छात्र ने आत्महत्या कर ली, पुलिस में दर्ज शिकायत के अनुसार अपने सहपाठियों की प्रताड़ना से तंग आकर उसने ऐसा कदम उठा लिया। आईआईटी खड़गपुर में मानसिक तनाव के कारण तीन वर्ष में सात छात्रों ने आत्महत्या कर ली। सिर्फ इस वर्ष राजस्थान के कोटा में तैयारी कर रहे 13 छात्रों ने तनाव में आकर आत्महत्या कर ली। कोलकाता में लॉ कॉलेज की छात्रा के साथ दो सीनियर छात्र और एक पूर्ववर्ती छात्र ने सामूहिक दुष्कर्म किया। पांच माह पहले आईआईटी कानपुर में एक शोधार्थी छात्र ने भी अपने प्राध्यापक पर गंभीर आरोप लगाकर आत्महत्या कर ली। एनसीआरबी के आंकड़े के अनुसार 13000 से अधिक छात्र प्रति वर्ष आत्महत्या कर रहे हैं, जो कुल आत्महत्या का 7.6 प्रतिशत है। आखिर क्या कारण है कि अपने सुनहरे भविष्य को त्याग कर छात्र मौत को गले

लगा रहे है?

शिक्षा परिसर का वातावरण कैसे होना चाहिए? अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की संकल्पना में ही शिक्षा परिवार की बात की गई है। नशामुक्त, पर्यावरण युक्त, स्वच्छ परिसर की बात बार-बार की जाती है। लेकिन आनंदमय सार्थक छात्र जीवन के लिए पूरी निष्ठा के साथ कार्य करने की आवश्यकता प्रबल होती जा रही है।

किसी भी विद्यार्थी के लिए उसके मित्र बहुत महत्व रखते हैं। मित्र वह होता है, जिससे हर विषय पर बात की जा सकती है। जो बात अपने माता-पिता से बताने में हिचकिचाते हैं, वही बात मित्रों को आसानी से बता दी जाती है। लेकिन अब मित्र भी दलों में बंट गए हैं। सौम्याश्री अभाविप की कार्यकर्ता थी, लेकिन उसके मित्रों ने ही उसकी चरित्र के बारे में सोशल मीडिया पर गंभीर टिप्पणियां की। प्रश्न यह है कि क्या अलग-अलग विचार होने के कारण मित्र नहीं बन सकते हैं? अगर सौम्याश्री के मित्रों ने समय पर उसको संभाल लिया होता तो इतनी बड़ी घटना घटित ही नहीं होती।

यह घटना देश की न्याय व्यवस्था पर भी प्रश्न खड़ी कर रही हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि विलम्बित न्याय भी अन्याय के बराबर होता है। अगर कालेज का आंतरिक अभियोग प्रकोष्ठ ईमानदारी एवं निरपेक्ष रूप में अपनी कार्य करता तो सौम्याश्री को उचित समय पर न्याय मिला जाता और वह आत्महत्या करने के लिए बाध्य नहीं होती।

समाज को व्यवस्थित रखने वाला शासन-प्रशासन अपने दायित्व से कभी दूर नहीं हो सकता। लेकिन पूरा मामला सामने आने के बाद भी प्रशासन ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया। सौम्याश्री के जाने के बाद उनके परिवार वाले दुःख में डूबे हुए हैं। उन्हें लगता है कि बेटी ने कई बार अपने दर्द को बांटना चाहा, लेकिन उसके दुःख को वह समझ नहीं पाए। ध्यान यह भी रखना होगा कि सिर्फ अच्छे संस्थान में दाखिला करा देने से माता-पिता के कर्तव्य समाप्त नहीं हो जाते। माता-पिता को अपने बच्चों के साथ सार्थक समय व्यतीत करना होगा, यह सभी को समझना ही होगा।

घटना के लिए सभी अर्थात पूरा सभ्य समाज दोषी है। ऐसे में समाज में नैतिकता, मनुष्यता और मूल्यबोध को बढ़ाना होगा, तभी ऐसी समस्या का निराकरण हो सकेगा। प्रा. यशवंत जी कहते थे कि कार्यकर्ता क्या बोल रहा है? उतना सुनने से काम नहीं चलेगा। वह जो नहीं बोल पा रहा है, वह भी समझना पड़ेगा। सौम्याश्री की घटना सभी के लिए एक बड़ी सीख है क्योंकि मानव जीवन से बढ़कर और कोई मूल्यवान चीज नहीं हो सकती है। ■

(लेखक, अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री हैं।)

। उत्तर प्रदेश ।

मानसिक प्रताड़ना से क्षुब्ध शारदा विवि की छात्रा ने की आत्महत्या

उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में स्थित शारदा विश्वविद्यालय में बैचलर ऑफ डेंटल साइंस (बीडीएस) छात्रा द्वारा आत्महत्या किए जाने के मामले में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के दबाव के बाद पांच आरोपियों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करने के साथ ही दो प्राध्यापकों को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जानकारी हो कि शारदा विश्वविद्यालय की बीडीएस की छात्रा ने गत 20 जुलाई को कुछ प्राध्यापकों की मानसिक प्रताड़ना से तंग आकर आत्महत्या कर ली थी। समूचे छात्र समाज की गरिमा और सुरक्षा से जुड़े इस मामले में अभाविप की स्थानीय इकाई ने पीड़िता के परिजनों के साथ मिलकर छात्रा को न्याय दिलाने के लिए आंदोलन किया। अभाविप के नेतृत्व में चले संघर्ष और प्रदर्शन के बाद पुलिस प्रशासन हरकत में आया और पांच आरोपियों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर दो प्राध्यापकों को गिरफ्तार कर लिया। अभाविप ने विश्वविद्यालय प्रशासन से एक निष्पक्ष जांच समिति का गठन करके घटना से जुड़े तथ्यों की गंभीरता से जांच करने की मांग की थी, जिससे कोई भी दोषी बचने न पाए। अभाविप के आंदोलन के बाद विश्वविद्यालय प्रशासन ने पांच आरोपियों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

सही निर्णय लिया जाता तो नहीं जाती सौम्याश्री की जान : अभाविप

ओडिशा के बालासोर स्थित फकीर मोहन ऑटोनॉमस कालेज की छात्रा एवं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की सक्रिय कार्यकर्ता सौम्याश्री की आत्मदाह से हुई दर्दनाक मृत्यु ने देश के शिक्षा जगत को झकझोर दिया है।

जानकारी के अनुसार कालेज के शिक्षा विभागाध्यक्ष समीर साहू द्वारा मानसिक एवं यौन उत्पीड़न के कारण प्रताड़ित सौम्याश्री ने जब साहस दिखाते हुए प्राचार्य को लिखित शिकायत दी, तो संस्थान ने दोषी शिक्षक के विरुद्ध कोई कठोर कदम नहीं उठाया, बल्कि आंतरिक शिकायत समिति की आड़ में पीड़िता को ही दोषी ठहराने का प्रयास किया। प्राचार्य ने गत 12 जुलाई को सौम्याश्री को यह कहकर निराश किया कि रिपोर्ट शिक्षक के पक्ष में है, समझौता कर लो। उसके बाद सौम्याश्री ने महाविद्यालय परिसर में स्वयं को आग के हवाले कर दिया। गत 14 जुलाई की रात भुवनेश्वर स्थित एम्स में उसकी मृत्यु हो गई।

यह घटना न केवल व्यक्तिगत उत्पीड़न की कहानी है, बल्कि देश के शिक्षण संस्थानों में फैली संस्थागत संवेदनहीनता, यौन हिंसा पर चुप्पी और दोषियों के संरक्षण का एक भयावह उदाहरण भी है। इस दुखद एवं अमानवीय घटना के विरोध में अभाविप ने देशव्यापी श्रद्धांजलि सभाओं, मोमबत्ती मार्च, हस्ताक्षर अभियानों और धरना-प्रदर्शन की घोषणा की, जिसके माध्यम से देशभर के विश्वविद्यालयों और कालेजों में अभाविप कार्यकर्ताओं ने सौम्याश्री को न्याय दिलाने की लड़ाई छेड़ दी। अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेंद्र सिंह सोलंकी ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि सौम्याश्री की मृत्यु सिर्फ एक छात्रा की त्रासदी नहीं, बल्कि संस्थानों की नैतिक विफलता और मौन मिलीभगत का परिणाम है। एक ओर वह शिक्षक जिन्होंने उत्पीड़न किया और दूसरी ओर नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया (एनएसयूआई) जैसे छात्र संगठनों से जुड़े लोग, जिन्होंने पीड़िता को ही अपमानित किया-दोनों समान रूप से अपराधी हैं। अभाविप इस मामले में न्याय सुनिश्चित करने के लिए सभी कानूनी और जन-संगठनात्मक प्रयास करेगी।

घटना को दुखद बताते हुए अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री शिवांगी खरवाल ने कहा कि यह घटना शिक्षण संस्थान में व्याप्त अन्याय एवं असंवेदनशीलता को उजागर करती है। अगर समय रहते प्रशासन ने संज्ञान लेकर सौम्याश्री की पीड़ा को समझा होता, तो आज एक होनहार छात्रा जीवन से हार न मानती।

अभाविप सौम्याश्री के साथ हुए अन्याय को कभी बर्दाश्त नहीं करेगा और जब तक दोषियों को कठोर सजा नहीं मिल जाती, तब तक संघर्ष करती रहेगी। अभाविप का स्पष्ट मानना है कि सौम्याश्री द्वारा झेला गया अन्याय, उपेक्षा और उत्पीड़न इस त्रासदी के मूल कारण हैं। उसके प्रयास, शिकायतें और न्याय की पुकार बार-बार अनसुनी की गईं, जिससे वह गहरे मानसिक संकट में पहुंच गई।

अभाविप ने कहा कि घटना के बाद ओडिशा पुलिस का रवैया गंभीर चिंता का विषय है। पुलिस ने कांग्रेस एवं बीजेडी से संबद्ध छात्र संगठनों के पदाधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई नहीं की, जिन्होंने सौम्याश्री की यौन उत्पीड़न के विरुद्ध जारी लड़ाई को कमजोर करने के लिए उसका चरित्र हनन किया और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। जबकि अभाविप के वह कार्यकर्ता, जिन्होंने सौम्याश्री को बचाने के लिए प्रयास किया और जिनमें वह स्वयं जलकर घायल हो गए, उन्हीं को पुलिस ने बंदी बना लिया। यह रवैया न केवल ओडिशा पुलिस की विफलता को दर्शाता है, अपितु उसके पक्षपातपूर्ण रवैए को भी उजागर करता है।

अभाविप-ओडिशा पूर्व प्रांत की प्रांत मंत्री कु. दीप्तिमयी प्रतिहारी ने कहा कि यदि अभाविप के कार्यकर्ताओं को प्रताड़ित किया गया और निर्दोषों को फंसाने का प्रयास जारी रहा तो अभाविप मौन नहीं रहेगी। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

The Sanyasi Who Saved the Constitution Story of Kesavananda Bharati and the Battle for Bharat's Soul

■ Dr. Pradeep Kumar

In the tranquil town of Kasaragod, on the northern edge of Kerala, the Edneer Mutt stood as a beacon of India's civilisational continuity. A centuries-old Hindu monastic institution belonging to the Smarta tradition of Advaita Vedanta, it had, for generations, been a center of spiritual wisdom, cultural preservation and dharmic service. But in the politically volatile decades following independence, this ancient bastion became the epicenter of a constitutional transformation that would decide the future of India's democracy.

At the heart of this story was a humble but resolute monk-Swami Kesavananda Bharati. Born in 1940, he ascended to the headship of the Edneer Mutt in his twenties. A master of Sanskrit, Vedas and Yakshagana theatre, Kesavananda Bharati was not a political figure. Yet when the lands of the Mutt were targeted under Kerala's radical land reform laws, he found himself thrust into a battle not only for the Mutt's property but for the soul of the Indian Constitution.

Kerala's Land Reforms and the Assault on Hindu Institutions

In the name of progress and social justice, the communist government of Kerala in the 1960s and 1970s initiated sweeping land reforms. What was presented as an egalitarian redistribution of land was, in reality, often a politically motivated expropriation of property-particularly from Hindu temples, Mutts and other dharmic institutions. This was no coincidence. Hindu institutions, unlike church-owned properties or mosque-managed endowments, lacked a unified legal shield. The reform laws disproportionately targeted Hindu landholders, undermining their centuries-old role in providing education, charity, and spiritual guidance.

The Edneer Mutt was among the institutions affected. Under the Kerala Land Reforms Act, the Mutt's land was deemed 'surplus' and was forcibly acquired by the state. For Swami Kesavananda Bharati, this wasn't just about land-it was about the state encroaching on the autonomy of spiritual institutions, endangering dharmic traditions and dismantling the cultural bedrock of Hindu society in Kerala.

This wasn't an isolated case. Many Hindu Mutts and temples in Kerala were similarly weakened, stripped of resources necessary to maintain rituals, festivals, schools and social service activities. At a time when the Constitution guaranteed religious freedom under Articles-25 and 26, these acts of selective expropriation reflected a creeping imbalance in secular governance.

The Legal Battle That Changed India

Determined to resist this injustice, Swami Kesavananda Bharati filed a writ petition in the Supreme Court on March 21, 1970 under Article-32 of the Constitution. The

challenge wasn't limited to a state law. The real fight was against a growing trend of constitutional amendments-specifically, the 24th and 25th Amendments-where Parliament claimed unlimited power to alter the Constitution, including Fundamental Rights.

These amendments were a reaction to the 1967 judgment in I. C. Golaknath v. State of Punjab, where the court had ruled that Parliament could not amend Fundamental Rights. Angered by this judicial restraint, the then government pushed through amendments to reassert its authority. The 24th Amendment allowed Parliament to amend any part of the Constitution. The 25th diluted the right to property and restricted judicial review.

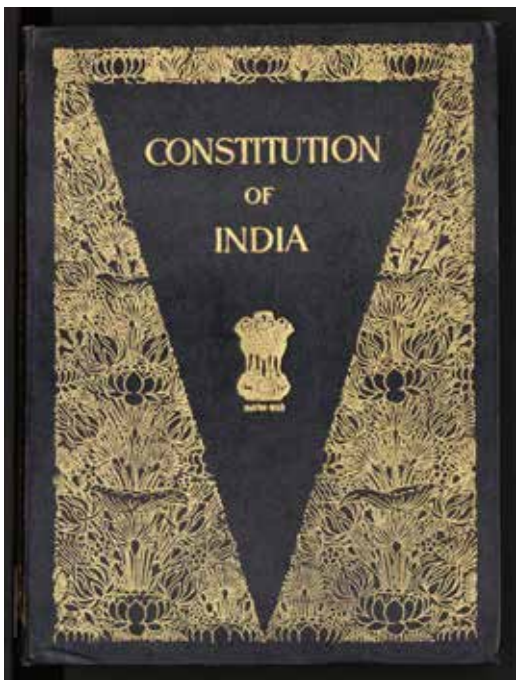

A 13-judge constitutional bench-the largest in Indian history-was constituted to hear the case, Kesavananda Bharati v. State of Kerala. For 68 days, the nation witnessed a historic debate between Parliament's authority and the Constitution's sanctity. Legendary advocate Nani Palkhivala argued on behalf of Kesavananda Bharati, passionately defending the limits of legislative power and the inviolability of the Constitution's foundational principles.

The Doctrine of Basic Structure

On April 24, 1973, the Supreme Court delivered its epoch-making verdict. In a narrow 7:6 majority, the court held that while Parliament could amend the Constitution, it could not alter its 'basic structure'. For the first time in independent India, the judiciary declared that there were certain core values-such as rule of law, separation of powers, fundamental rights and judicial review-that were beyond the reach of transient political majorities.

This 'Basic Structure Doctrine' was not explicitly found in the Constitution but was read into it by the court to preserve its soul. In doing so, the court stood as a sentinel against the kind of authoritarian overreach that was becoming more visible in the early 1970s.

Though Swami Kesavananda Bharati did not get back all the land of the Mutt, his case preserved the Constitution itself. He emerged as the unlikely guardian of Indian democracy-a spiritual leader who, without raising his voice, protected the legal foundation of the Republic.

The Shadow of the Emergency

Just two years after the verdict, in 1975, India plunged into its darkest constitutional crisis-the Emergency. Civil liberties were suspended, dissent was crushed, and press freedom extinguished. It was in this authoritarian climate that the importance of the Basic Structure Doctrine became even clearer.

The Parliament passed the 42nd Amendment, attempting to make even judicial review and Fundamental Rights subject to parliamentary will. But in Minerva Mills v. Union of India (1980), the Supreme Court struck it down, citing the Basic Structure Doctrine established in Kesavananda Bharati. Without this doctrine, India might have descended into permanent constitutional dictatorship.

Legacy and Lessons

Swami Kesavananda Bharati returned to his spiritual duties after the judgment, never seeking political mileage or recognition. His focus remained on Advaita Vedanta, Sanskrit education and the cultural life of the Edneer Mutt. When he passed away in 2020 at the age of 79, India mourned the loss of a silent sentinel.

Today, as India celebrates over seven decades of democratic governance, it is vital to remember that its constitutional resilience owes much to one monk's defiance of state injustice. The Kesavananda Bharati judgment is not just about legal doctrine-it is a reminder that India's spiritual and civilisational foundations must be respected, not undermined, in the pursuit of modernity.

The targeting of Hindu institutions under the guise of land reform in Kerala is a chapter that deserves national introspection. In a secular state, all religious traditions must be treated with equal fairness. The repeated weakening of Hindu socio-religious institutions under political and ideological pressures is an issue that must be addressed with honesty and resolve.

Conclusion

The story of Kesavananda Bharati is one of dharma defending democracy. A lone ascetic took a stand, not with protest marches or slogans, but with constitutional faith. In defending the rights of his Mutt, he defended the rights of every Indian. He showed that spiritual conviction, when guided by constitutional values, can safeguard the most precious ideals of the Republic.

In today's times, when debates around constitutional morality, religious freedoms, and state overreach continue to unfold, the story of Kesavananda Bharati serves as both inspiration and warning. It teaches us that the Constitution is not just a legal document-it is a living expression of Bharat's ancient yet ever-renewing soul. ■

(Author is Associate professor, School of Low Governance and public policy, Chanakya University, Bengaluru)

सुधी पाठकों !

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' अगस्त 2025 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों एवं खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव एवं विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई-मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

रंग लाया अभाविप का संघर्ष

छात्रों की मांगों को दिल्ली विश्वविद्यालय प्रशासन ने किया स्वीकार

दिल्ली विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) और अभाविप नीत दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ का अनिश्चितकालीन धरना समाप्त हो गया। धरने पर बैठे अभाविप कार्यकर्ताओं द्वारा भूख हड़ताल करने के बाद विश्वविद्यालय प्रशासन ने प्रमुख मांगों को स्वीकार कर लिया। अभाविप का यह धरना गत 21 जुलाई से शुरू हुआ था और 4 अगस्त को धरने पर बैठे छात्रों ने भूख हड़ताल कर दी थी।

भूख हड़ताल के दूसरे दिन अभाविप एवं डूसू पदाधिकारियों से मिलने के बाद विश्वविद्यालय प्रशासन ने आंदोलन समाप्त करने की अपील की, जिसे मांगें स्वीकार होने के बाद समाप्त कर दिया गया। अभाविप ने यह आंदोलन पीजी पाठ्यक्रमों में 'एक कोर्स-एक फीस' नीति लागू करने, केंद्रीकृत हॉस्टल आवंटन प्रणाली की स्थापना, सभी कालेजों में आंतरिक शिकायत समिति का गठन एवं सक्रिय संचालन तथा मनमानी फीस वृद्धि पर रोक लगाने जैसी प्रमुख मांगों को लेकर किया। आंदोलन के पहले दिन ही प्रशासन ने केंद्रीकृत हॉस्टल प्रणाली की मांग स्वीकार कर ली थी, लेकिन शेष मांगों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

इसके विरोध में अभाविप एवं अभाविप नेतृत्व वाले डूसू पदाधिकारियों ने गत 4 अगस्त से भूख हड़ताल शुरू कर दी। आंदोलन को मिल रहे व्यापक छात्र समर्थन को देखते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय प्रशासन ने तीन प्रमुख मांगों क्रमशः एक कोर्स-एक फीस, आंतरिक शिकायत समिति का गठन एवं प्रभावी क्रियान्वयन तथा केंद्रीकृत हॉस्टल प्रणाली को लागू करने पर सहमति जताई है। दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ सचिव मित्रविंदा कर्णवाल ने कहा कि यह केवल अभाविप की नहीं, पूरे छात्र समाज की जीत है। अभाविप ने छात्र हित में जो आवाज़ उठाई, उसका असर सामने है। विश्वविद्यालय प्रशासन को छात्र शक्ति के आगे झुकना पड़ा। यह आंदोलन छात्र अधिकारों की पुनः स्थापना की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। अभाविप प्रशासन को चेतावनी देती है कि यदि मांगों के क्रियान्वयन में कोताही बरती गई, तो अभाविप पुनः व्यापक आंदोलन करेगी।■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

देशभर में मनाया गया अभाविप का 77वां स्थापना दिवस

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 77वें स्थापना दिवस पर देश में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें संगठन की वैचारिक प्रतिबद्धता और सामाजिक उत्तरदायित्व का समावेश स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ। देश के सभी हिस्सों में अभाविप इकाइयों द्वारा विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, विभागों, नगरों और जिलों में संगोष्ठी, जन संवाद, सेवा कार्य, दीपोत्सव, वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, स्वामी विवेकानंद से जुड़े स्मारकों की सफाई, विद्यार्थियों के साथ संवाद, निबंध प्रतियोगिता, सांस्कृतिक गतिविधियां, रक्तदान शिविर और युवा संवाद जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन आयोजनों के माध्यम से अभाविप के आयामों क्रमशः सेवार्थ विद्यार्थी, विकासार्थ विद्यार्थी, राष्ट्रीय कला मंच, शोध आयाम, खेलो भारत से जुड़ी जानकारियां भी दी गईं। इन अभियानों से युवाओं को जोड़ते हुए अभाविप ने अपनी रचनात्मक, वैचारिक एवं राष्ट्रवादी भूमिका को और अधिक सुदृढ़ किया।

अभाविप की 77 वर्षों की यह यात्रा न केवल छात्र आंदोलनों की सशक्त भूमिका की साक्षी रही है, बल्कि इसने राष्ट्र पुनर्निर्माण में युवा शक्ति के योगदान का मार्ग भी प्रशस्त किया है। अभाविप अब लगभग 60 लाख सक्रिय सदस्यता के साथ न केवल भारत का, बल्कि विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन बन चुका है, जो विचार, व्यवहार और नेतृत्व के माध्यम से समाज में सार्थक परिवर्तन ला रही है और व्यक्तित्व निर्माण के माध्यम से राष्ट्र के पुनर्निर्माण के अपने ध्येय को लेकर प्रतिबद्ध है।

इस अवसर पर अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेंद्र सिंह सोलंकी ने कहा कि अभाविप की 77 वर्षों की यात्रा मात्र एक संगठनात्मक इतिहास नहीं, बल्कि यह भारतीय छात्र समाज की जाग्रत चेतना का प्रतीक है। उन समर्पित कार्यकर्ताओं को नमन करते हैं, जिन्होंने विचार एवं संघर्ष के पथ पर अपने जीवन को समर्पित किया। सेवा, संगठन और संस्कार की त्रयी के माध्यम से आज जो राष्ट्रव्यापी जनजागरण खड़ा हुआ है, वह भारत के भविष्य की दिशा तय करेगा। राजधानी **पटना** में अभाविप दक्षिण बिहार प्रांत द्वारा स्थापना दिवस के अवसर पर नूतन-पुरातन

कार्यकर्ता मिलन समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन (पटना) के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक रामनवमी प्रसाद और रणवीर नंदन भी शामिल हुए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री चौबे ने कहा कि अभाविप केवल एक छात्र संगठन नहीं है, यह एक संस्कार केंद्र है, जिसने न जाने कितने युवाओं को राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित किया है। युवाओं को केवल शैक्षणिक योग्यता तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उन्हें सामाजिक चेतना, राष्ट्रभक्ति और नैतिक मूल्यों के साथ जीवन पथ पर अग्रसर होना चाहिए। अभाविप इसी लक्ष्य के साथ वर्षों से कार्य कर रहा है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक रामनवमी प्रसाद नें कहा कि अभाविप की तीन मूलभूत धाराओं- छात्र हित, राष्ट्र हित और समाज हित को जीवन में उतारना चाहिए। अभाविप केवल एक छात्र संगठन नहीं, बल्कि यह राष्ट्र के पुनर्निर्माण की प्रयोगशाला है।

इस अवसर पर कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष रणवीर नंदन ने कहा कि अभाविप संगठन का मार्गदर्शन जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा पुंज का काम करता है। यह संगठन केवल छात्र हित की बात नहीं करता, बल्कि राष्ट्र की आत्मा से युवाओं को जोड़ता है। संगठन अपने संस्कारों, अनुशासन और विचारधारा को जीवित रखे हुए है और यही इसकी सबसे बड़ी ताकत है।

उत्तर प्रदेश स्थित **वाराणसी** में अभाविप काशी हिंदू विश्वविद्यालय द्वारा संगोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन अभाविप की प्रान्त अध्यक्षा प्रा. सुचिता त्रिपाठी, सिद्धांत दर्शन विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रा. चंद्रशेखर पाण्डेय, इकाई अध्यक्ष प्रशांत राय एवं इकाई मंत्री भाष्करादित्य त्रिपाठी द्वारा माता सरस्वती और स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा पर पुष्पार्चन कर किया। कार्यक्रम में इकाई मंत्री भाष्करादित्य त्रिपाठी ने अभाविप के कार्य, स्थापना के उद्देश्य एवं वर्तमान स्थिति की जानकारी दी। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रांत अध्यक्ष प्रा. सुचिता त्रिपाठी ने कहा कि अभाविप की 77वर्ष की यात्रा भारत के विकास की यात्रा रही है। "ज्ञान, शील, एकता" ध्येय वाक्य के साथ कार्य करने वाले अभाविप कार्यकर्ताओं ने सदैव ही राष्ट्र प्रथम भावना के साथ कार्य किया है। आज अभाविप की आवाज़, भारत के युवाओं की आवाज़ का प्रतिनिधित्व करते हुए विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन के रूप में कार्य कर रही है। कार्यक्रम में आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार अनिकेत मिश्रा, द्वितीय पुरस्कार सलोनी दुबे, तृतीय पुरस्कार अंशिका चौहान को मिला ।

प्रयागराज में अभाविप इलाहाबाद विश्वविद्यालय इकाई के द्वारा अभाविप प्रयागराज ने छात्रशक्ति भवन में बनाये गये 'प्राध्यापक यशवंत राव केलकर पुस्तकालय' का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में पूर्व कुलपति प्रा. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी ने अभाविप के मूल्यों पर विस्तृत प्रकाश डाला। कार्यक्रम में अभाविप प्रयाग महानगर अध्यक्ष मनीष, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इकाई उपाध्यक्ष हिमांशु एवं काशी प्रांत कार्यसमिति सदस्य धीरज के साथ बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं की भी उपस्थिति रही।

आगरा में अभाविप ने आगरा विश्वविद्यालय के खंदारी परिसर स्थित जे. पी. सभागार में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया। गोष्ठी का शुभारंभ अभाविप के क्षेत्रीय सह संगठन मंत्री विपिन गुप्ता, एस. एन. मेडिकल कालेज के प्राचार्य प्रशांत गुप्ता, महानगर अध्यक्ष डा. राजेश कुशवाहा, समाज सेविका अपूर्वा सिंह, महानगर मंत्री शिवांग खंडेलवाल एवं ईशा शाक्य ने किया। गोष्ठी में मुख्य वक्ता विपिन गुप्ता ने अभाविप पर विस्तार से जानकारी दी।

मुख्य अतिथि प्राचार्य प्रशांत गुप्ता ने कहा कि अभाविप की कार्यशैली भारतीय समाज की कार्यशैली है और अभाविप के कार्यकर्ता राष्ट्र पुनर्निर्माण हेतु कार्यरत हैं। कार्यक्रम की अतिथि समाजसेविका अपूर्वा सिंह ने कहा कि आज भ्रम की दुनिया में अपने पथ से विचलित न हो और किसी भी प्रकार की राष्ट्रविरोधी बातों का अनुसरण न करके केवल और केवल अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहे। यह कार्य अभाविप करती आ रही है। गोष्ठी में महानगर अध्यक्ष डा. राजेश कुशवाहा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

जम्मू में अभाविप जम्मू महानगर द्वारा जम्मू क्लब में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें 10वीं और 12वीं कक्षा के बोर्ड परीक्षा में सर्वाधिक नंबर हासिल करने वाले छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। अभाविप का यह कार्यक्रम युवाओं की शैक्षणिक

उपलब्धियों को प्रोत्साहित करने और सीखने की भावना को मजबूत करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं केंद्रीय विश्वविद्यालय (जम्मू) के कुलपति प्रा. संजीव जैन ने कहा कि युवाओं में तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। उन्हें नवाचार, उद्यमिता और सामाजिक परिवर्तन के लिए तैयार करना होगा। यह हमारे भविष्य के निर्माता हैं। विशिष्ट अतिथि के रूप में अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने युवाओं को राष्ट्र के विकास में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि विद्यार्थी दिवस याद दिलाता है कि युवाओं में असीम ऊर्जा और क्षमता है। इस अवसर पर हरीश शर्मा (जम्मू महानगर मंत्री) और राजेश भारद्वाज (महानगर अध्यक्ष) ने भी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र, अभिभावक और समाज के गणमान्य लोग उपस्थित रहे और विद्यार्थियों की मेहनत और उपलब्धियों की सराहना की।

गुवाहाटी में अभाविप ने प्राग्ज्योति परियोजना क्षेत्र (मशखोआ) में एक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें नगर के चार सौ संस्थानों में उच्चतर और उच्चतर माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले 1,200 विद्यार्थियों को पद्मश्री बीरुबाला राव कृति विद्यार्थी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साथ ही पत्रकार डब्बू नारायण कोंवर, युवा अभिनेत्री बैभबी गोस्वामी, कौशिक भारद्वाज, युवा गायक बिश्रुत शैकिया, युवा उद्यमी जयत्री शर्मा, युवा यूट्यूबर हरपाल शैकिया को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक बशिष्ठ बुजरबरुआ, असम सरकार के कैबिनेट मंत्री अशोक सिंघल, अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन सचिव गोविंद नायक, अभाविप असम प्रदेश की प्रदेश अध्यक्ष रीतमोनी वैश्य भी उपस्थित रहे। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

।असम।

घुसपैठियों के विरुद्ध कार्रवाई का अभाविप ने किया समर्थन

असम में अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों के विरुद्ध असम सरकार द्वारा जारी कार्रवाई का अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने समर्थन करते हुए स्वागत किया है। अभाविप के प्रदेश मंत्री हेरल्ड मोहन ने कहा कि असम में दशकों से बांग्लादेशी घुसपैठियों की बढ़ती संख्या राज्य के जनसंख्या संतुलन, सांस्कृतिक पहचान, आर्थिक संसाधनों और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुकी है। अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों के विरुद्ध राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे सघन अभियान का अभाविप पूर्ण समर्थन करती है। साथ ही इस सख्त कार्रवाई के लिए मुख्यमंत्री डा. हिमंत विश्व शर्मा की सरकार को धन्यवाद देती है।

गुवाहाटी में गत 26 जुलाई को आयोजित बैठक में उन्होंने कहा कि बांग्लादेशी घुसपैठिए न केवल असम की सुरक्षा के लिए, बल्कि पूरे पूर्वोत्तर के साथ-साथ सम्पूर्ण भारत की सुरक्षा के लिए एक गम्भीर खतरा बन चुके हैं। अभाविप का मानना है कि अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों को चिन्हित कर राज्य से बाहर करना असम के जनजातीय और स्थानीय समुदायों के भविष्य के लिए अनिवार्य है। यह कार्रवाई संविधान और कानून के अनुरूप एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में है। राज्य में अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों की उपस्थिति ने वोट बैंक की राजनीति को बढ़ावा दिया है, जिससे लोकतंत्र को भी खतरा उत्पन्न हुआ है।

उन्होंने कहा कि अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों ने राज्य के कई जिलों में भूमि अतिक्रमण और नकली दस्तावेज़ों के आधार पर नागरिकता प्राप्त कर स्थानीय नागरिकों के अधिकारों का हनन किया है। इससे असम के निवासियों की जनसंख्या, रोजगार, संस्कृति और अस्मिता को गहरी क्षति पहुंच रही है।

अभाविप राज्य सरकार की राष्ट्रहितैषी पहल का समर्थन करते हुए मांग करती है कि अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान की प्रक्रिया और तेज की जाए। बैठक में मुख्य रूप से गुवाहाटी विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष मानस प्रतिम कलिता सहित बड़ी संख्या में अभाविप के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

सिदो-कान्हू ने जगाया आत्मगौरव एवं स्वराज का संकल्प : अभाविप

हूल दिवस (30 जून) के उपलक्ष्य पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने झारखंड प्रांत सहित देश के कई हिस्सों में माल्यार्पण, संगोष्ठी, खेल-कूद, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, इकाई दर्शन जैसे कार्यक्रम आयोजित कर हूल क्रांति के नायक वीर सिदो-कान्हू को याद किया। अभाविप द्वारा आयोजित एक संगोष्ठी में उनकी अमर बलिदानी गाथा से वर्तमान पीढ़ी को परिचित करवाया गया।

वक्ताओं ने कहा कि 1855 में हुई हूल क्रांति, 1857 के स्वातंत्र्य समर की पूर्व पीठिका थी। सिदो-कान्हू के आह्वान पर गांव के गांव उमड़ पड़ते थे। वर्तमान समय के युवाओं को उनके जीवन से सीख लेकर राष्ट्र को विकसित बनाने के लिए अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए। सिदो-कान्हू की जन्मभूमि **साहिबगंज** में अभाविप की साहिबगंज जिला इकाई ने सिदो-कान्हू की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके संगोष्ठी का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रदेश सह मंत्री सुनिधि कुमारी ने कहा कि हूल विद्रोह भारत के स्वतंत्रता संग्राम की पहली ज्वाला थी, जिसने संथाल जनजाति के आत्मगौरव और स्वराज के संकल्प को जगाया। सिदो-कान्हू के त्याग और बलिदान ने जनमानस में यह विश्वास पैदा किया कि विदेशी शोषण के विरुद्ध संघर्ष किया जा सकता है। अभाविप वीरों के बलिदान को नमन करती है और युवाओं को उनके पदचिह्नों पर चलने का आह्वान करती है।

चतरा जिले में भी एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें हूल क्रांति के ऐतिहासिक महत्व और वर्तमान संदर्भों पर चर्चा की गई। कार्यक्रम में प्रदेश सह मंत्री रोहित पांडे ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि हूल क्रांति सिर्फ़ संथालों का विद्रोह नहीं था, बल्कि यह सामाजिक न्याय, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की लड़ाई थी। स्वतंत्र भारत में उन नायकों को याद रखना होगा, जिनके बलिदान से देश स्वतंत्र हुआ। विद्यार्थियों को चाहिए कि वह इतिहास को जानें, समझें और उससे प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

खूंटी जिले में भी अभाविप ने एक संगोष्ठी का आयोजन कर सिदो-कान्हू की विरासत पर चर्चा की। वक्ताओं ने स्थानीय

संघर्षों और जनजातीय चेतना को राष्ट्रीय आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में रेखांकित किया। **जामताड़ा** जिले में हूल दिवस की संध्या पर सिदो-कान्हू की प्रतिमा के समक्ष दीपोत्सव का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम युवाओं और स्थानीय नागरिकों की व्यापक भागीदारी के साथ संपन्न हुआ। दीपों की रोशनी में स्वतंत्रता के इन जननायकों को स्मरण कर संकल्प लिया गया कि उनके सपनों का भारत गढ़ने में अभाविप अग्रणी भूमिका निभाएगी।

क्यों मनाया जाता है हूल दिवस

हूल एक ऐसी क्रांति है, जिसने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध पचास हज़ार योद्धाओं से सशस्त्र विद्रोह किया था, जिसे हूल क्रांति कहा जाता है। 30 जून 1855 को स्वराज, स्वशासन और स्वधर्म के संकल्प के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध व्यापक सशस्त्र विद्रोह की लड़ाई वर्तमान झारखंड के साहिबगंज स्थित भोगनाडीह में लड़ी गई थी। नेतृत्वकर्ता महान योद्धा सिदो-कान्हू ने अपने भाई चांद-भैरव और बहन फूलों-झानो के साथ सर्व समाज को एकत्रित कर स्वाधीनता के आंदोलन का सूत्रपात किया था। ईसाई पंथ को मानने वाले अंग्रेजों के विरुद्ध तत्कालीन समय में यह दूसरी सशस्त्र क्रांति थी। ब्रिटिश शासन की भीषण पराजय की पटकथा यहीं से आरंभ हुई है। विद्रोह में सिदो-कान्हू के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने परंपरागत शस्त्र की मदद से हिस्सा लिया, जिससे अंग्रेजी सेना बुरी तरह से घबराकर भाग गई थी। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

Flames Across the Crescent How the Israel-Iran-Palestine Conflict Could Redefine Global Stability

■ Dr Nitin Sharma

Hamas disrupted the fragile equilibrium in the Middle East in October 2023. Hamas's catastrophic cross-border attack on southern Israel has resulted in the abduction of numerous Israelis and the fatalities of over 1,200 Israelis, serving as the catalyst for a regional crisis. Israel's swift and robust military action in Gaza, initially aimed at dismantling Hamas infrastructure, rapidly evolved into a wider conflict. Iran, along with its allies, such as Hezbollah in Lebanon and various militias in Syria and Iraq, has adopted increasingly aggressive stances towards Israel. The ongoing reaction of hostilities has evolved from a localised conflict into a significant geopolitical shockwave, carrying far-reaching implications for global energy markets, diplomatic relations and strategic alliances.

India, with deepening ties to Israel and enduring relationships with the Arab world and Iran, now finds itself navigating one of the most complex foreign policy challenges in its post-independence history. The challenge encompasses not only choosing the appropriate diplomatic tone but also managing energy security, ensuring the welfare of over eight million Indian nationals in the region and striking a strategic balance between East and West.

A Conflict Rooted in History

In the aftermath of the First World War and the collapse of the Ottoman Empire, Britain received the mandate to govern Palestine from the League of Nations. During the 1920s and 1930s, there was a notable increase in Jewish immigration, influenced by the aspirations of Zionism and the rising persecution of Jews in Europe. The demographic changes had heightened tensions between Jewish immigrants and the local Arab community, leading to violent uprisings and a profound sense of mistrust.

In 1947, the United Nations proposed the partition of Palestine into two distinct Jewish and Arab states. The Jewish leadership accepted the plan, whereas Arab leaders dismissed it entirely. The declaration of Israeli independence in 1948 prompted a military attack from five Arab nations. In a dramatic turn of events, Israel withstood the attack and managed to extend its territorial boundaries. In this conflict in the last 77 years, more than 7,00,000 Palestinians have been displaced, with a significant number still residing in refugee camps.

The Six-Day War of 1967 represented a major transition in history. Israel has taken control of the West Bank, Gaza, East Jerusalem, the Golan Heights and the Sinai Peninsula. The peace treaty subsequently returned Sinai to Egypt, but Israel still holds control over the remaining territories.

Iran : From Revolution to Resistance

The 1979 Islamic Revolution in Iran completely changed the landscape of regional geopolitics. The fall of the Shah and the ascent of Ayatollah Khomeini led to the establishment of an Islamic Republic characterised by a strongly anti-Israel stance. Iran has established itself as the ideological and logistical hub of what it refers to as the "Axis of Resistance" opposing Israeli and Western influence. The backing of proxy groups by Iran significantly altered the regional

dynamics. Tehran is providing funding, arms, and training to Hezbollah in Lebanon, Hamas in Gaza and Shiite militias in Iraq and Syria. In exchange, they serve as strategic buffers and leverage points in the larger conflict with Israel. Iran's strategy of asymmetric warfare has enabled the nation to uphold plausible deniability, all the while persistently eroding the security of Israel. A shadow war has emerged, characterised by cyberattacks, assassinations, drone warfare and maritime skirmishes. In 2024, the situation escalated as the proxy conflict transformed into a confrontation.

The 2024 and June 2025 Escalation : New Frontlines, New Dangers

In a historic event in early 2024, a precise Israeli airstrike in Damascus resulted in the deaths of high-ranking officials from Iran's Islamic Revolutionary Guard Corps (IRGC). In response, Iran launched a direct retaliation by firing dozens of drones and missiles at Israel. The event signifies a historic moment, representing the first direct military engagement between the two countries in contemporary times. Despite the successful interception of numerous projectiles by Israeli and allied countries, the symbolic significance of the events was profound.

On June 13, 2025, Israel executed a high-precision airstrike within Iranian borders, focusing on a significant military facility. The operation eliminated the commander of Iran's Islamic Revolutionary Guard Corps (IRGC) Aerospace Force, along with several high-ranking officers. A big and unprecedented strike has happened, which is a big step up in the secret war between Israel and Iran. Iran then sent a number of drones and ballistic missiles into Israeli territory. Some of these missiles were successfully stopped by allies, but others did a lot of damage to military and civilian establishments. Things got worse after the US got directly involved. The U.S. sent a stealth B-2 bomber to Fordow, Natanz and Isfahan to look for suspected nuclear sites. This is because Iran seems to be getting ready for a possible nuclear breakout. The goal of the operation was to destroy Iran's stockpile of enriched uranium and put off its plans to build nuclear weapons. This made it obvious to Washington that it would not let nuclear weapons spread. The most recent events have brought the region to the brink of a possible full-scale conflict. But on June 24, 2025, President Donald Trump announced that there will be a ceasefire between Israel and Iran.

Occupation Question and International Law

The issue of occupation is at the heart of the dispute between Israel and Palestine. International law says that Israel's continued building of settlements in the West Bank and East Jerusalem is illegal. In 2004, the International Court of Justice gave an advisory judgement saying that Israel's building of settlements and a separation barrier breaks the Fourth Geneva Convention.

Israel strongly defends its activities by focusing on security issues, citing both continuing threats and its historical ties to the area. Palestinians see these settlements as an act of land theft and a major danger to the two-state solution. The growing number of settlers, which has now reached over 7,00,000, makes it much harder for a Palestinian state to be contiguous. India has always pushed for talks to start up again for a peaceful two-state solution based on the borders that existed before 1967.

Abraham Accords and the Strategic Realignment

In 2020, the Abraham Accords, facilitated by the United States, marked a significant shift in diplomatic relations, leading to the normalisation of ties between Israel and the United Arab Emirates, Bahrain, Sudan and Morocco. These countries have begun to regard Iran as the greatest menace in the region and their support for the Palestinian cause has vanished because of their shift in focus. This agreement marks a big change in focus, putting economic growth, access to Israeli technology, and compatibility

with U.S. strategic goals at the top of the list. The UAE and Israel have started working together on projects in the defence, agricultural and fintech sectors.

JCPOA and the Nuclear Wildcard

Iran's nuclear program makes the current confrontation much more dangerous. Iran and the P5+1 countries, which include the US, UK, France, Russia, China and Germany, made a big deal in 2015 called the Joint Comprehensive Plan of Action (JCPOA). This agreement aimed to curb Iran's nuclear ambitions in exchange for lifting economic sanctions. But in 2018, the Trump administration pulled out of the deal on its own, which makes it harder to continue forward with talks.

Reports suggest that by the middle of 2025, Iran may only be a few months away from being able to make nuclear weapons, which Israel sees as a threat to its existence. The rise of a nuclear-armed Iran is likely to greatly change the security situation in the Middle East, possibly starting an arms race that might involve Saudi Arabia, Turkey, and maybe even Egypt.

India's Calculated Neutrality

Several different interests influence India's geopolitical position. The country gets around 85% of its crude oil from other countries, with a large part coming from the Gulf region. Millions of Indian workers are now residing in countries like the UAE, Saudi Arabia and Qatar, where they bring back billions of dollars in remittances. India has a strong defence and intelligence partnership with Israel, which includes buying radar equipment, missiles and surveillance technology.

India has made a lot of progress in the previous several years in getting its energy from a wider range of sources, so it does not have to rely as much on the Strait of Hormuz. This strategic approach is based on the possibility that Iran could halt world oil flow, which would cause problems. India has also built up its strategic oil reserves and put money into renewable energy to protect itself from shocks like this. Its diplomatic replies are modest; they call for restraint and conversation without directly criticising any of the parties concerned.

Is it a ceasefire or a strategic pause?

On June 24, 2025, a major diplomatic breakthrough occurred when Iran and Israel reached a ceasefire, with quiet assistance from regional nations and the United States. Experts say that even if missile launches and proxy attacks have stopped, this situation is more like a ceasefire than a true peace deal. Experts say that the conflict could flare up again if people do not get really involved in important issues like territory, nuclear weapons, proxy wars and deep-seated ideological conflicts. Unresolved complaints continue and both sides are getting ready for further fights in the future.

India's Moment of Strategic Maturity

The ongoing struggle between Israel, Iran and Palestine has become a key factor in determining the future of diplomacy around the world. The fight has gone beyond regional borders and become a major clash of ideas, technologies and world regimes. India has to behave strategically mature in a world that is changing quickly.

India is poised to enhance its energy security, uphold diplomatic neutrality and use its relationships with various regional actors to position itself as a stabilising force in the region. The credibility of its voice, resonating with both the Global North and South, could play a crucial role in influencing the development of future peace frameworks.

Flames engulf the landscape, capturing the attention of the global audience as they spread across the crescent. Decisions made in the upcoming months will determine whether to extinguish the flames or allow them to spread across the globe. India's influence, while often overlooked, may turn out to be crucial. ■

(Author is chairman of WOSY)

पहला सहकारी विश्वविद्यालय गुजरात में

देश का पहला सहकारी विश्वविद्यालय गुजरात स्थित आणंद में बनने जा रहा हैं। विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए भूमिपूजन गत 5 जुलाई को हुआ । माना जा रहा हैं कि देश के सहकारिता आंदोलन में शिक्षा, प्रशिक्षण और नवाचार की दिशा में यह विश्वविद्यालय नई सकारात्मक पहल की दिशा में मील का पत्थर स्थापित करेगा, जिससे भारत को पूरे विश्व में सहकारिता का गढ़ बनाया जा सकेगा। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह द्वारा संपन्न भूमिपूजा से जुड़े कार्यक्रम में राज्य के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। 125 एकड़ भूमि क्षेत्र में बनने वाले विश्वविद्यालय के निर्माण लगभग पांच सौ करोड़ रुपए का खर्च आएगा। देश का यह पहला सहकारी विश्वविद्यालय भारत में सहकारी आंदोलन के जनक त्रिभुवन दास किशिभाई पटेल को समर्पित किया गया है। इसीलिए विश्वविद्यालय का नाम त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय रखा गया है। माना जा रहा है कि तीस करोड़ सदस्यों वाले देश के सहकारी आंदोलन में शिक्षा, प्रशिक्षण और नवाचार में जारी रिक्तता को भरने का काम यह सहकारी विश्वविद्यालय करेगा। साथ ही नीतियों का निर्माण, नवाचार को बढ़ावा, नए अनुसंधान, के साथ ही देश की सहकारी संस्थाओं के प्रशिक्षण का एक-समान पाठ्यक्रम तैयार कर सहकारिता को नई दिशा देने का काम करेगा। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

। मध्य प्रदेश ।

संस्कृत भाषा वाले शास्त्रीय विषयों की शिक्षा अब हिंदी में

भारत की प्राचीन वैदिक परंपरा के गहन ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता को देखते हुए मध्यप्रदेश स्थित उज्जैन के महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय ने संस्कृत विषयों की शिक्षा संस्कृत के साथ-साथ हिंदी में देने का निर्णय लिया है। विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक वर्ष 2025-26 से यह निर्णय लागू कर दिया हैं। यह निर्णय शास्त्रीय विषयों में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को बड़ी राहत देगा। विश्वविद्यालय प्रशासन का मानना है कि हिंदी माध्यम को विकल्प बनाकर वह समाज के उस बड़े वर्ग को पारंपरिक ज्ञान से जोड़ पाएगा, जो अब तक इससे वंचित है। विश्वविद्यालय प्रशासन के निर्णय के बाद छात्रों की संख्या बढ़ेगी, जिससे संस्कृत के प्रचार-प्रसार मदद मिलेगी। विश्वविद्यालय में अभी 14 स्नातक, 15 स्नातकोत्तर, 23 डिप्लोमा और 11 सर्टिफिकेट स्तर के कोर्स संचालित किए जा रहे है। जानकारी के अनुसार शिक्षा पाठ्यक्रमों में भाषा का माध्यम हिंदी होगा, लेकिन शिक्षण सामग्री वही

पारंपरिक ग्रंथ होंगे। शास्त्रों को हिंदी के जरिए समाज तक पहुंचाने से वैदिक ज्ञान परंपरा को नवजीवन मिलेगा। देश में अभी 17 संस्कृत विश्वविद्यालयों का संचालन किया जा रहा है। महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय ने इसी वर्ष मार्च में विश्वविद्यालय के आधिकारिक दस्तावेजों पर इंडिया की जगह भारत शब्द लिखने का निर्णय भी लागू किया है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

समृद्ध धरोहर हैं भारत की सांस्कृतिक विरासत : आशीष चौहान

राष्ट्रीय कला मंच, विद्यानिधि और प्रदर्शनकारी कला विभाग के संयुक्त तत्वावधान से आयोजित अखिल भारतीय कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक विरासत पश्चिम की भौतिकवादी दृष्टि के सामने गहन सांस्कृतिक चेतना का परिचय देती है।

वर्धा में गत 22 जुलाई को आयोजित राष्ट्रीय कला मंच के दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय (वर्धा) में हुआ। कार्यशाला में कुल आठ सत्रों का आयोजन किया गया। पहले सत्र में ध्रुव कांडपाल और विक्टोरिया ने राष्ट्रीय कला मंच की प्रासंगिकता और सामाजिक महत्व पर विचार रखे। दूसरे सत्र "कला में स्थापित विमर्श और हमारी भूमिका" में संस्कार भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री अभिजीत गोखले और कमोलिका कैम ने कला को सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र पुनर्निर्माण का सशक्त माध्यम बताया। तीसरे सत्र "कला मंच एक कड़ी : परिषद कार्यकर्ता बनाने से पेशेवर कलाकार के बीच" में अभाविप राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री देवदत्त जोशी और मणिकांठा ने युवाओं की रचनात्मक यात्रा पर विचार साझा किए। चौथे सत्र "पंच परिवर्तन में कलाकार की अहम भूमिका" में अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने प्रतिभागियों को पंच परिवर्तन के मूल्यों तथा कलाकार के गुण से अवगत कराया। इसी सत्र में आयोजित "हुनरबाज" सांस्कृतिक कार्यक्रम में देश के अलग-अलग क्षेत्र से आए प्रतिभागियों ने अपने क्षेत्र के लोक नृत्य, लोक गायन, लोक कथा आदि प्रस्तुत किए। पांचवें सत्र में अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री अंकित शुक्ल तथा प्रा. मारुति ने अखिल भारतीय स्तर से लेकर स्थानीय स्तर तक के आयोजनों को आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक बनाने की दिशा में प्रकाश डाला। छठवां सत्र "संगठनात्मक संरचना एवं प्रवास योजना" पर आधारित रहा। सातवां सत्र "लोक कला जागृति सोशल से सोशल मीडिया तक" विषय पर केंद्रित रहा, जिसमें लोककला के संरक्षण तथा प्रचार-प्रसार के लिए सामाजिक मीडिया के साथ सामंजस्य पर बल दिया गया। आठवें सत्र "मुक्त मंचन एवं संकलन" में राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री देवदत्त जोशी, राष्ट्रीय कला मंच के अखिल भारतीय प्रमुख प्रदीप मेहता और राष्ट्रीय कला मंच की राष्ट्रीय संयोजक गुंजन ठाकुर ने सभी प्रतिभागियों द्वारा उनके प्रांतों में किए गए राष्ट्रीय कला मंच के कार्यक्रमों की जानकारी साझा की। साथ ही प्रतिभागियों के प्रश्नों का उचित उत्तर देकर मार्गदर्शन प्रदान किया।

सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर को समर्पित प्रदर्शनी

दो दिवसीय अखिल भारतीय कार्यशाला के अंतर्गत स्वर्गीय सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर को समर्पित एक विशेष प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी

का उद्घाटन सामाजिक कार्यकर्ता सचिन अग्निहोत्री ने किया। प्रदर्शनी में सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर के जीवन, संघर्ष और संगीत साधना की विस्तृत झलक प्रस्तुत की गई। साथ ही भारत की सांस्कृतिक परंपराओं और कला की विविध धाराओं को भी समग्रता में दर्शाया गया। प्रदर्शनी में यशवंतराव केलकर, सिंधुताई सपकाल, बिरसा मुंडा तथा लक्ष्मीबाई केलकर जैसी प्रेरणादायक विभूतियों के जीवन, संघर्ष और समाज के प्रति उनके योगदान को भी प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया गया। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय कला मंच द्वारा वर्ष भर में आयोजित रचनात्मक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का चित्रमय विवरण भी प्रदर्शनी का प्रमुख आकर्षण रहा।

प्रदर्शनी में प्राचीन भारतीय नाट्यशास्त्र, अभिनय कला, रस सिद्धांत, भाव, धर्मी, प्रवृत्ति, वृद्धि जैसे तत्वों पर भी विशेष जानकारी दी गई, जिसमें भरतमुनि द्वारा प्रतिपादित नाट्यशास्त्रीय सिद्धांत को आधुनिक संदर्भों में समझाया गया। यह अनुभाग कला, रंगमंच और सांस्कृतिक अध्ययन से जुड़े शोधार्थियों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक सिद्ध हुआ। प्रदर्शनी में भारतीय सिनेमा के 'द ग्रेट शोमैन" राज कपूर की फिल्म यात्रा, उनका सृजनात्मक योगदान और समाज पर उनके प्रभाव को भी विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया गया। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य युवाओं को भारतीय कला, संस्कृति और महान विभूतियों के जीवन से जोड़ना तथा उनके आदर्शों को आत्मसात करने के लिए प्रेरित करना रहा। प्रदर्शनी का अवलोकन देशभर से आए अखिल भारतीय कार्यशाला के प्रतिभागियों द्वारा किया गया, जिन्हें यह अनुभव अत्यंत समृद्ध और प्रेरणादायी प्रतीत हुआ। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

एसएयू में सामने आया वामपंथी षड़यंत्र : अभाविप

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (अभाविप) ने दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय (एसएयू) की प्रॉक्टोरियल कमेटी द्वारा दिए गए हालिया निर्णय का स्वागत करते हुए कहा कि इस निर्णय ने परिसर में सक्रिय वामपंथी तत्वों के षड्यंत्र का पर्दाफाश कर दिया है। यह निर्णय अभाविप के रुख को न केवल सही साबित करता है, बल्कि न्याय और सत्य के मूल्यों की पुनः पुष्टि भी करता है।

जानकारी हो कि गत 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर जब अनेक छात्र उपवास पर थे, उस समय षड़यंत्रपूर्वक भोजनालय के सचिव यशदा सावंत द्वारा छात्रों के समक्ष मांसाहारी भोजन परोसा गया। यह कार्य न केवल धार्मिक भावनाओं के प्रति असंवेदनशील था, बल्कि छात्रों को उकसाने के लिए किया। इसका जब छात्रों ने शांतिपूर्ण विरोध किया, तब यशदा सावंत के सहयोगियों ने उपवास करने वाले छात्रों के साथ हिंसा करके परिसर में भय एवं तनाव का माहौल बना दिया। स्थिति उस समय और भयावह हो गई, जब इन्हीं तत्वों ने विरोध कर रहे छात्रों पर गलत और बेबुनियाद आरोप लगाए। यह वामपंथी गिरोह की वह रणनीति थी, जिसका उद्देश्य धार्मिक और नैतिक मूल्यों में विश्वास रखने वाले छात्रों का चरित्र हनन करना था।

मामला सामने आने के बाद एसएयू की स्वतंत्र और निष्पक्ष प्रॉक्टोरियल जांच के बाद विश्वविद्यालय ने अपना निर्णय दिया। निर्णय के बाद हिंसा और अनुशासनहीनता करने वाले सुदीप्तो दास को विश्वविद्यालय से निष्कासित किया गया और यशदा सावंत को पांच हजार रुपए का जुर्माना देने का दंड दिया गया। अभाविप ने कहा कि यह निर्णय उन छात्रों के संघर्ष को भी सम्मान देता है, जिन्होंने अपने धार्मिक अधिकारों, गरिमा और शांतिपूर्ण छात्र जीवन के लिए आवाज उठाई। अभाविप ने विश्वविद्यालय प्रशासन से आग्रह किया है कि वह वामपंथ की विचारधारा के विरुद्ध सतर्क रहते हुए यह सुनिश्चित करें कि छात्र परिसरों में संवाद, सांस्कृतिक समरसता और पारदर्शिता बनी रहे। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

‘शोधशाला’ में अनुसंधान की भारतीय दृष्टि पर मंथन

देश में अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पावन नगरी प्रयागराज स्थित भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईआईटी) में दो दिवसीय ‘शोधशाला’ (राष्ट्रीय कार्यशाला) का आयोजन किया गया। शोध फाउंडेशन द्वारा आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ स्वामी विवेकानंद एवं मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईआईटी (प्रयागराज) के निदेशक प्रा. मुकुल शरद और मुख्य वक्ता के रूप में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने हिस्सा लिया। कार्यशाला का उद्देश्य देश में अनुसंधान को अधिक प्रभावशाली बनाना, अकादमिक एवं औद्योगिक क्षेत्रों के बीच समन्वय को सशक्त करना तथा युवा शोधार्थियों को नवीनतम शोध पद्धतियों एवं संसाधनों से परिचित कराना रहा। कार्यशाला में सभी राज्यों के 120 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के उपरांत ईश्वर शरण महाविद्यालय के प्राचार्य प्रा. आनंद शंकर सिंह ने ‘भारतीय ज्ञान परंपरा’ विषय पर और दिल्ली विश्वविद्यालय स्थित डा. बी. आर. आंबेडकर बायोमेडिकल रिसर्च सेंटर के निदेशक प्रा. सुनीत कुमार सिंह ने ‘भारत में जीवंत अनुसंधान के लिए प्रकाशन के अवसर’ विषय पर सारगर्भित विचार रखे। कार्यशाला में मुख्य वक्ता आशीष चौहान ने ‘शोध में संभावनाएं एवं अवसर’ विषय पर प्रतिनिधियों को संबोधित किया।

अपने संबोधन में कार्यशाला के मुख्य अतिथि प्रा. मुकुल शरद ने कहा कि अनुसंधान को केवल एक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक संस्कृति के रूप में देखने की आवश्यकता है। उन्होंने शोध के विभिन्न चरणों के माध्यम से मानवता के कल्याण को केंद्र में रखने की बात कही। मुख्य वक्ता आशीष चौहान ने अपने

संबोधन में कहा कि प्रयागराज में कुछ माह पूर्व आयोजित आध्यात्मिक महाकुंभ की भांति ही यह शोध कार्यशाला भी ज्ञान के मंथन का केंद्र बन रही है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज भी भारत की कई कंपनियां नवाचार के स्थान पर केवल नकल कर रही हैं और अनुसंधान में उनका योगदान बहुत कम है। ऐसे में गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान के लिए यह आवश्यक है कि सभी मिलकर संसाधनों के समुचित उपयोग के साथ मतभेदों से ऊपर उठकर कार्य करें।

शोध के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुन आनंद ने कहा कि आज भारत का शैक्षणिक तंत्र औपनिवेशिक मानसिकता से ग्रसित है। इससे बाहर निकलने के लिए आवश्यक है कि ‘स्वयं’ से बदलाव की शुरुआत हो। इस कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिनिधियों को शोध की सही दिशा एवं पद्धतियों से अवगत कराने के साथ ही शोध के लिए आकादमिक नेतृत्व को तैयार करना है। कार्यशाला में प्रा. सुनीत ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शोध के अवसरों की जानकारी दी। अभाविप काशी प्रांत की अध्यक्षा प्रा. सुचिता त्रिपाठी ने भारतीय ज्ञान परंपरा की विशिष्टता को रेखांकित करते हुए भारतीय अनुसंधान परंपरा को आत्मसात करने की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यशाला के समापन सत्र में अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री एस. बालकृष्ण ने कहा कि वर्तमान

समय की मांग है कि भारत अपनी प्राचीन ज्ञान-परंपरा से प्रेरणा लेकर वैश्विक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करे। अनुसंधान को भारतीय दृष्टिकोण से करना ही इसकी सार्थकता सिद्ध करेगा। शोध के राष्ट्रीय प्रमुख डा. आलोक सिंह ने कार्यशाला में हिस्सा लेने वाले सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि यह कार्यशाला केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि सभी प्रतिभागियों को अपने-अपने क्षेत्रों में शोध संस्कृति के विस्तार का माध्यम बनना चाहिए। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रा. गिरीश चंद्र त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षा को संकीर्ण दायरे में न बांधकर सर्वसमावेशी रूप देना चाहिए। अनुसंधान का अंतिम उद्देश्य व्यक्ति के माध्यम से राष्ट्र का निर्माण होना चाहिए। गत 18 एवं 19 जुलाई को आयोजित

कार्यशाला के समापन पर शोध के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुन आनंद ने आगामी शोध योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी दी। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

। महाराष्ट्र ।

आरोग्य विज्ञान विश्वविद्यालय छात्र परिषद चुनाव में अभाविप को मिली शानदार विजय

नासिक स्थित महाराष्ट्र आरोग्य विज्ञान विश्वविद्यालय में हुए छात्र परिषद चुनाव में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने शानदार विजय हासिल की है। छात्र परिषद चुनाव में अभाविप ने अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव सहित पांच पदों पर जीत का परचम लहराया।

महाराष्ट्र स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय में छात्र परिषद चुनाव गत 7 जुलाई को संपन्न हुए थे। चुनाव परिणाम आने के बाद अध्यक्ष पद पर एस.आर.टी.आर. शासकीय मेडिकल कालेज की कांबले सुजाता लक्ष्मण, उपाध्यक्ष पद पर शासकीय आयुर्वेद कालेज (धाराशिव) के नलवड़े आदर्श अनिल निर्वाचित हुए हैं। वामनराव इथापे नर्सिंग कालेज (संगमनेर) के कवले चैतन्य दत्ता सचिव पद और एस.के. होम्योपैथिक मेडिकल कालेज (बीड) के औसरमाले भूषण गोविंदरा संयुक्त सचिव पद के लिए निर्विरोध चुने गए।

विजयी पदाधिकारियों को विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मिलिंद निकुंभ, चुनाव अधिकारी एवं कुलसचिव डा. राजेंद्र बंगाल ने बधाई देते हुए कहा कि नवनिर्वाचित छात्र परिषद पदाधिकारियों को न केवल शिक्षा में, बल्कि खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी छात्रों की संख्या बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। साथ ही शैक्षणिक समस्याओं, परीक्षाओं और अन्य गतिविधियों के बारे में समुचित जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

चुनाव में विजय हासिल करने के बाद अभाविप ने कहा कि छात्रों ने अभाविप के प्रतिनिधियों पर जो विश्वास व्यक्त किया है, उसे कभी टूटने नहीं देंगे। नवनिर्वाचित पदाधिकारी विश्वविद्यालय प्रशासन और छात्रों के बीच सेतु का कार्य करेंगे, ताकि छात्रों से जुड़ी समस्याओं का अविलंब निदान हो सके। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

युवा भारत के लिए प्रेरणास्रोत बने ग्रुप-कैप्टन शुभांशु शुक्ला

■ संजय दीक्षित

नए भारत की उपलब्धियों की सूची में एक नई उपलब्धि, भारतीय वायु सेना के ग्रुप-कैप्टन शुभांशु शुक्ला के रूप में जुड़ गई है। यह उपलब्धि इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे पहले 1984 में भारतीय वायु सेना के विंग कमांडर (पूर्व) राकेश शर्मा ने भारत के पहले अंतरिक्ष यात्री होने का गौरव हासिल किया था। 41 वर्षों के बाद एक बार फिर ग्रुप-कैप्टन शुक्ला के रूप में दूसरा ऐसा अंतरिक्ष यात्री मिला है, जो भारत के निवासी है। गत 25 जून को निजी अंतरिक्ष अनुसंधान मिशन एक्सिओम-4 के चार सदस्यीय दल में शामिल ग्रुप-कैप्टन शुक्ला अपनी यात्रा को सफलतापूर्वक पूरी करने के बाद 15 जुलाई को वापस धरती पर लौट आए। देश से लेकर विदेश में रहने वाले भारतीयों के लिए यह एक भावुक करने वाला अवसर रहा।

गर्व के साथ स्वागत

ग्रुप-कैप्टन शुक्ला की सुरक्षित वापसी पर देश में नहीं, बल्कि विदेश में रहने वाले भारतीयों, युवाओं, बच्चों एवं बुजुर्गों में उल्लास की लहर दौड़ पड़ी। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में रहने वाले उनके परिवार के सभी सदस्यों के साथ ही विश्व भर में भारत की इस गर्वपूर्ण उपलब्धि की सराहना की गई। भारत ने इस उपलब्धि को 'दुनिया के लिए गर्व का क्षण, भारत के लिए वैभव का क्षण' बताते हुए कहा कि यह मिशन भारत की वैश्विक वैज्ञानिक सहयोग की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। यह केवल एक वैज्ञानिक मिशन नहीं है बल्कि यह मानवता की साझा यात्रा में भारत की एक विश्वसनीय साझेदार की भूमिका को प्रतिबिंबित करता है। आगामी समय में भारत गगनयान मिशन के जरिए और भी बड़े लक्ष्यों की ओर देख रहा है और देश अब मानव अंतरिक्ष मिशन की बड़ी शक्तियों में से एक बनने की ओर अग्रसर है।

मिशन एक्सिओम-4

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा, अमेरिका) और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) की संयुक्त पहल वाले

मिशन एक्सिओम-4 में पोलैंड और हंगरी ने भी हिस्सा लिया। यह मिशन अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) की यात्रा से जुड़ा हुआ था, जिसमें हिस्सा लेने वाले चार यात्रियों में ग्रुप-कैप्टन शुक्ला शामिल थे। अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) की यात्रा करने वाले पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री के रूप में ग्रुप-कैप्टन शुक्ला के साथ पोलैंड के अंतरिक्ष यात्री स्लावोज़ उज़्नान्स्की, हंगरी के अंतरिक्ष यात्री टिबोर कापू और अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री पैगी व्हिटसन भी शामिल थी । अमेरिकी यात्री पैगी व्हिटसन ने दूसरी बार वाणिज्यिक मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन का नेतृत्व किया। यह मिशन भारत, पोलैंड और हंगरी के लिए आईएसएस से संबंधित पहली सरकार समर्थित मानव अंतरिक्ष उड़ान रही। मिशन के दौरान ग्रुप-कैप्टन शुक्ला ने पायलट की भूमिका का निर्वहन किया।

अंतरिक्ष में हुए अध्ययन

अंतरिक्ष में अपने अठारह दिवसीय प्रवास में ग्रुप-कैप्टन शुक्ला सहित पूरे दल ने साठ से अधिक प्रयोग किए, जिनमें सात भारत-विशिष्ट सूक्ष्म-गुरुत्व अध्ययन भी शामिल रहे, जो भारत के स्वदेशी अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए भविष्य में महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे। भारत में पूरी तरह से डिजाइन और विकसित सात पूर्ण स्वदेशी माइक्रोग्रैविटी प्रयोगों को ग्रुप-कैप्टन शुभांशु शुक्ला द्वारा संचालित किया गया। पहले प्रयोग में खाद्य सूक्ष्म शैवाल का अध्ययन, दूसरा प्रयोग अंतरिक्ष की

परिस्थितियों में अंकुरित बीजों, खास तौर पर मूंग और मेथी के अंकुरण और पोषण गुणों की जांच, तीसरे प्रयोग में अंतरिक्ष में मांसपेशियों के नुकसान के महत्वपूर्ण मुद्दे का समाधान एवं मांसपेशियों के क्षरण के पीछे जैविक तंत्र को समझना और अंतरिक्ष यात्री स्वास्थ्य के लिए संभावित क्रियाकलापों की पहचान करना, चौथे प्रयोग में अंतरिक्ष की परिस्थितियों में टार्डिग्रेड के अस्तित्व, पुनरुत्थान और प्रजनन की जांच, पांचवें प्रयोग में माइक्रोग्रैविटी में मनुष्यों और इलेक्ट्रॉनिक डिस्प्ले के बीच के संपर्क को समझना, छठे प्रयोग में सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण में नाइट्रोजन स्रोत के रूप में यूरिया का उपयोग करके साइनोबैक्टीरिया के विकास की खोज एवं सातवें प्रयोग में बीज अनुकूलन परीक्षण शामिल रहा, जिसमें चावल, लोबिया, तिल, बैंगन और टमाटर के बीजों का परीक्षण सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण के संदर्भ में किया गया। इसका उद्देश्य इन बीजों पर अंतरिक्ष की स्थितियों के प्रभाव का आकलन करना था, जिसका लक्ष्य अंतरिक्ष कृषि को आगे बढ़ाना और पृथ्वी और उससे परे खेती के लिए उपयुक्त जलवायु-अनुकूल पौधों की किस्मों को विकसित करना है।

अंतरिक्ष के किए गए अन्य अध्ययनों में मानव शरीर क्रिया विज्ञान, जीवन विज्ञान, अंतरिक्ष से पर्यावरण की निगरानी, पदार्थ विज्ञान, सूक्ष्म शैवाल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित डाटा प्रसंस्करण संबंधी अन्य अध्ययन सम्मिलित बताए गए। अंतरिक्ष में सूक्ष्म गुरुत्व में फसल के बीजों के अंकुरण और वृद्धि का परीक्षण भी किया गया, जिसका उद्देश्य अंतरिक्षयात्रियों के लिए विश्वसनीय खाद्य स्त्रोत सुनिश्चित करना था। मिशन के दौरान अंतरिक्ष में कंप्यूटर स्क्रीन के उपयोग के प्रभावों को जानने के साथ ही अन्य कई परीक्षण भी किए गए। माना जा रहा है कि इस परीक्षणों के आधार पर भविष्य में होने वाले अनुसंधानों में मदद मिलेगी।

अब गगनयन की तैयारी

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ निवासी ग्रुप-कैप्टन शुक्ला को दो हजार घंटे से अधिक समय की उड़ान का अनुभव है। उन्हें जून' 2006 में वायुसेना की फाइटर विंग में कमीशन मिला था। सुखोई-30 एमकेआई, मिग-21, मिग-29, जगुआर, हॉक, डोर्नियर और एएन-32 जैसे कई तरह के विमानों को उड़ाने वाले ग्रुप-कैप्टन शुक्ला भारत के गगनयान मानव अंतरिक्ष मिशन के लिए चयनित अंतरिक्ष यात्री भी हैं। भारत जल्द ही अपना पहला मानव अंतरिक्ष यान मिशन-गगनयान को अंतरिक्ष में भेजने की तैयारी कर रहा है। जानकारी के अनुसार मिशन गगनयन में तीन अंतरिक्ष यात्री हिस्सा लेंगे। यह सभी भारतीय वायु सेना के पायलट हैं और इनमें ग्रुप-कैप्टन शुक्ला भी शामिल हैं, जिनका अंतरिक्ष यात्री प्रशिक्षण के लिए चयन 2019 में हुआ था । बाद में उन्हें रूस के यूरी गगारिन कॉस्मोनॉट प्रक्षिशण केंद्र में प्रशिक्षित किया गया। अन्य यात्रियों के रूप में ग्रुप-कैप्टन प्रशांत बालकृष्णन नायर, ग्रुप-कैप्टन अजीत कृष्णन एवं ग्रुप-कैप्टन अंगद प्रताप का चयन किया गया है। गगनयान मिशन भारत का वह महत्वाकांक्षी मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम है, जिसमें यात्रियों के दल को अल्प अवधि के लिए पृथ्वी की निचली कक्षा में भेजने की तैयारी की जा रही है। यह मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन की दृष्टि से भारत की स्वदेशी क्षमता का प्रदर्शन करेगा। धीरता के साथ जारी व्यापक तैयारियों के बीच गगनयान मिशन की सफलता के बाद भारत भी उन देशों में शामिल हो जाएगा, जो स्वतन्त्र मानव अंतरिक्ष उड़ान के क्षेत्र में अपना दबदबा बनाए हैं। इन देशों में अभी रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन शामिल हैं।

अंतरिक्ष में बढ़ते कदम

पिछले एक दशक के दौरान देश के अंतरिक्ष क्षेत्र में निस्संदेह ऐतिहासिक बदलाव देखा जा सकता है। अंतरिक्ष क्षेत्र से जुडी सरकारी नीतियों में हुए आमूलचूल परिवर्तन, ऊर्जावान स्टार्टअप तंत्र और भविष्य आधारित कार्यप्रक्रिया इसमें अहम भूमिका निभा रही हैं। लगातार नवाचार, निवेश और प्रतिभा विकास के साथ देश अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भी अग्रणी बनने की दिशा में तेजी से कदम बढ़ा रहा है। निरंतर प्रयासों के साथ इसरो अपनी तकनीकी दक्षता को बढ़ा रहा है, जिससे अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में देश के कदम मजबूत हो रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में अनेक ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल की हैं। 23 अगस्त 2023 को चंद्रयान-3 ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर ऐतिहासिक लैंडिंग की थी। इस दिन को अब राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी तरह, आदित्य-एल-1 मिशन ने सूर्य के रहस्यों को समझने में नई दिशा दी है। यह उपलब्धियां देश की वैज्ञानिक प्रतिभा और आत्मनिर्भरता का प्रमाण हैं। ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि ग्रुप-कैप्टन शुक्ला के माध्यम से देश को मिली सफलता युवा पीढ़ी के लिए वह प्रेरणा एवं मिसाल है, जो भविष्य में उपलब्धियों के नए द्वार खोलेगी। ■

विश्व धरोहर बने मराठा शौर्य के प्रतीक बारह किले

भारत के 'मराठा सैन्य परिदृश्य' को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल कर लिया गया है। यह मान्यता प्राप्त करने वाली भारत की 44वीं संपत्ति बन गई है। यह वैश्विक सम्मान भारत की चिरस्थायी सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करता है, जो इसकी स्थापत्य प्रतिभा, क्षेत्रीय पहचान और ऐतिहासिक निरंतरता की विविध परंपराओं को प्रदर्शित करता है। महाराष्ट्र में वीरता एवं पराक्रम के गढ़ के रूप में विख्यात बारह मराठा किलों को संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) की विश्व धरोहर सूची में शामिल किए जाने का निर्णय पेरिस में आयोजित विश्व धरोहर समिति (डब्ल्यूएचसी) के 47वें सत्र के दौरान लिया गया। आधिकारिक तौर पर यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थलों के रूप में मान्यता प्राप्त यह किले न केवल अपने इतिहास के लिए, बल्कि अपनी गहन स्थापत्य कला के लिए भी वैश्विक ध्यान आकर्षित करेंगे। किले की रचना, चट्टानों में उकेरी गई जल प्रबंधन प्रणाली से लेकर अपनी रणनीतिक डिजाइन, भूमिगत सुरंगों सहित अन्य विशेषताओं के आधार पर यूनेस्को द्वारा लिए गए निर्णय में जिन बारह किलों को शामिल किया गया है, उनमें महाराष्ट्र का सबसे ऊंचा किला सलहेर, इंजीनियरिंग चमत्कार का प्रतीक सिंधुदुर्ग किला, छत्रपति शिवाजी महाराज की जन्मस्थली के रूप में विख्यात शिवनेरी किला, लोहागढ़ किला, सुवर्णदुर्ग किला, विजयदुर्ग किला, खंडेरी (कान्होजी आंग्रे द्वीप) किला, जिंजी किला (तमिलनाडु), प्रतापगढ़ किला, पन्हाला किला, राजगढ़ किला और रायगढ़ किला शामिल है। यूनेस्को से विश्व धरोहर का दर्जा प्राप्त होने के साथ अब यह बारह मराठा किले वैश्विक वास्तुकारों के लिए अध्ययन का केंद्र बनेगें ।

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

महिला शतरंज विश्व कप जीतने वाली पहली भारतीय महिला खिलाडी बनी दिव्या देखमुख

महाराष्ट्र स्थित नागपुर की निवासी दिव्या देशमुख ने इतिहास बना दिया है। वह महिला शतरंज विश्व कप जीतने वाली पहली भारतीय महिला खिलाडी बन गईं हैं। 19 वर्षीय दिव्या फिडे महिला शतरंज विश्व कप-2025 का खिताब हासिल करके भारत की चौथी महिला ग्रैंडमास्टर भी बन गई हैं। गत 28 जुलाई को बाकू (अज़रबैजान) में हुए फिडे महिला शतरंज विश्व कप (एफआईडीई 2025) के फाइनल मैच में उनका मुकाबला भारत की प्रसिद्ध खिलाड़ी कोनेरू हम्पी से था। उन्होंने फाइनल में कोनेरू हम्पी को रैपिड टाई-ब्रेक में 1.5–0.5 से हराया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस उपलब्धि के लिए दिव्या को बधाई दी और हम्पी की उनके शानदार प्रयास के लिए सराहना की। फाइनल से पहले खेले गए मैच में दोनों खिलाड़ियों ने शानदार खेल दिखाया। लेकिन टाई-ब्रेक में दिव्या ने अपनी पकड़ मजबूत की और फिर वे जीत हासिल करके महिला विश्व कप-2025 की चैंपियन बनीं। वह महिला ग्रैंडमास्टर का खिताब जीतने वालीं भारत की चौथी और देश की 88वीं ग्रैंडमास्टर हैं। इससे पहले गत वर्ष दिव्या ने विश्व जूनियर चैंपियनशिप जीती थी। साथ ही 2024 में बुडापेस्ट में हुए शतरंज ओलंपियाड में उन्होंने भारत के स्वर्ण पदक जीतने में अहम भूमिका निभाई थी।

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

प्रमिला ताई मेढ़े ने मरणोपरांत पूरा किया देहदान का संकल्प

राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका के देवलोकगमन पर अभाविप ने अर्पित की श्रद्धांजलि

समाजसेवा, नारी सशक्तिकरण और संगठन निष्ठा के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान देने वाली राष्ट्र सेविका समिति की चतुर्थ वंदनीय प्रमुख संचालिका श्रद्धेय प्रमिला ताई मेढ़े के देवलोकगमन पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने गहन संवेदनाएं एवं श्रद्धांजलि अर्पित की है। शरीर पूर्ण होने के इस दुखद क्षण पर अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेंद्र सिंह सोलंकी, राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान, राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री देवदत्त जोशी, प्रा. मिलिंद मराठे ने अभाविप कार्यकर्ताओं की ओर से अंतिम प्रणाम निवेदित करते हुए, उनसे प्रेरणा पाए समस्त कार्यकर्ता परिवार की ओर से उनके प्रति संवेदनाएं प्रकट की और दिवंगत आत्मा की परम सद्गति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

अभाविप ने अपने शोक सन्देश में कहा कि समय-समय पर ताई का अभाविप कार्यकर्ताओं को मिला स्नेह और मार्गदर्शन अमूल्य धरोहर है। उनका संपूर्ण जीवन समाजोत्थान, संगठन विस्तार और राष्ट्र पुनर्निर्माण के लिए समर्पित रहा। श्रद्धेय प्रमिला ताई का जीवन मातृशक्ति में राष्ट्रभक्ति, सेवा और संस्कार की अखंड धारा प्रवाहित करने वाला रहा। नारी सशक्तिकरण और समाज जागरण में उनके कार्य अविस्मरणीय हैं।

1978 से 2003 तक उन्होंने समिति की अखिल भारतीय प्रमुख कार्यवाहिका और उसके पश्चात प्रमुख संचालिका के रूप में कार्य करते हुए संगठन को नई दिशा दी। देश के कोने-कोने में जाकर, गांव-गांव में महिलाओं को जागृत करके उन्होंने उनमें आत्मबल का संचार किया। वह विदर्भ प्रांत की कार्यवाहिका, केन्द्रीय कार्यालय प्रमुख, आंध्र प्रदेश की पालक अधिकारी जैसे अनेक दायित्वों पर रहीं। उनका मातृतुल्य स्नेह और सरल स्वभाव स्वयंसेविकाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा। उन्होंने शिक्षक के रूप में अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए संगठन के कार्य को शाखा से प्रांत तक नई गति दी। अपने जीवन में सादगी, अनुशासन और समर्पण का जो उदाहरण प्रस्तुत किया, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत रहेगा। राष्ट्रीय सेविका समिति के कार्ययज्ञ में अपनी जीवन समिधा अर्पित कर अंततोगत्वा उन्होंने मरणोपरांत देहदान का संकल्प लेकर अपने शरीर को भी समाज के लिए समर्पित कर दिया। यह त्याग उनके उच्च आदर्शों का प्रत्यक्ष प्रमाण है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

सशक्त युवा-समृद्ध कृषि से विकसित भारत का निर्माण

कौशल, नवाचार एवं उद्यमिता विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

■ अजीत कुमार सिंह

भारतीय कृषि क्षेत्र से जुड़े युवाओं, वैज्ञानिकों, शिक्षकों और नवाचारकर्ताओं को एक मंच पर लाने के उद्देश्य से एग्रीविजन का 9वां राष्ट्रीय सम्मेलन राजधानी दिल्ली में आयोजित किया गया। भारत रत्न सी. सुब्रमण्यम सभागार में संपन्न हुए राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत सहित नेपाल एवं बांग्लादेश के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

दो दिवसीय सम्मेलन में देश के 54 से अधिक कृषि विश्वविद्यालयों से आए 450 से अधिक प्रतिभागी उपस्थित रहे, जिनमें स्नातक स्तर के 212 छात्र, परास्नातक एवं पीएचडी के 126 छात्र-छात्राएं, 67 शिक्षक और दस से अधिक कुलपति एवं अधिष्ठाता शामिल थे। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में देश के तीन प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों को विशेष सम्मान एवं छात्र को 'श्रेष्ठ विद्यार्थी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

कृषि शिक्षा, तकनीक और उद्यमिता को नई दृष्टि देने के लिए गत 26 एवं 27 जुलाई को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद स्थित सभागार में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक मांगीलाल जाट ने कहा कि एग्रीविजन खेती से ऊपर कल्टिवेशन एंड परफेक्शन आफ ह्यूमन बीइंग पर काम कर रहा है, जिसकी बहुत बड़ी आवश्यकता है। विकसित भारत के लिए विकसित कृषि और समृद्ध किसान बहुत आवश्यक है। उसके बिना विकसित भारत की कल्पना करना मुश्किल कार्य है। लेकिन कृषि सिर्फ कृषि नहीं है, उसके साथ बहुत सारी चीजें जुड़ी हुई हैं। उन पर ध्यान नहीं देंगे तो तो विकसित कृषि-समृद्ध किसान की अवधारणा साकार नहीं हो सकेगी। समस्या के समाधान के लिए उन्होंने कृषि क्षेत्र में नवाचार की दिशा में मंथन करके कार्य योजना बनाने का सुझाव दिया।

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि गोविंद नायक ने बताया कि एग्रीविजन का राष्ट्रीय सम्मेलन प्रत्येक वर्ष किसी विशेष थीम पर केंद्रित होता है। अबकी बार की थीम केवल कौशल, नवाचार और उद्यमिता ही नहीं है, बल्कि सशक्त युवा-समृद्ध कृषि भी है। उन्होंने कहा कि जीडीपी केवल आर्थिक आधार पर नहीं होना चाहिए। सभी को भोजन उपलब्ध करने वाले कृषक हैं, उनके बारे में भी सोचना पड़ेगा। कृषि क्षेत्र से अगर युवा को जोड़ना है तो किसानों को समृद्ध करना होगा और परंपरागत कृषि को नवाचार एवं तकनीक से जोड़ना होगा।

सम्मेलन में अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री क्षमा शर्मा एवं डा. पी. एस. पांडेय ने भी कृषि क्षेत्र से जुडी समस्याओं का समाधान करने के लिए कौशल पर जोर देने का सुझाव देते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र में नवाचार और उद्यमिता की आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति से कृषि क्षेत्र को बेहतर बनाया जा सकता है।

दो दिवसीय सम्मेलन के पहले दिन दो तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, जिनमें पहला सत्र 'डिजिटल कृषि, स्मार्ट फार्मिंग और ग्रामीण युवाओं के लिए एग्रीप्रेन्योरशिप' विषय पर केंद्रित था। सत्र में कई वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किए। दूसरा सत्र 'जलवायु अनुकूल कृषि, उन्नत जीन संपादन तकनीक और संसाधन दक्षता' पर आधारित रहा, जिसमें कई विशेषज्ञों ने अपने प्रस्तुति दी। तीन अन्य समानांतर सत्रों में शोध छात्रों के पोस्टर प्रेजेंटेशन, अभाविप और एग्रीविज़न पदाधिकारियों के साथ शिक्षकों का संवाद हुआ, जिसमें विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए मार्गदर्शन सत्र शामिल था। प्रस्ताव सत्र में एग्रीविजन के भावी उद्देश्यों, संगठनात्मक सुधारों और छात्रों से प्राप्त सुझावों के आधार पर कृषि शिक्षा के विकास के

लिए प्रस्ताव पारित किए गए। सम्मेलन के दौरान देश को पांच क्षेत्र में विभाजित कर प्रतिनिधियों की क्षेत्रीय बैठकें आयोजित की गईं, जिनमें संगठन की समीक्षा और आगामी रणनीतियों पर चर्चा हुई।

सम्मेलन के दूसरे दिन 'विकसित भारत की संकल्पना' विषय पर आयोजित विशेष संवाद सत्र में अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री देवदत्त जोशी ने युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सहभागिता के लिए प्रेरित किया। 'रोल मॉडल सत्र' में तीन युवा कृषि उद्यमियों- नवीन पटवाल (मशरूम फार्मिंग), डा. संजय वायल (ईशवेद बायोटेक) और श्रुति मेहता (भारत गोदाम सॉल्यूशन्स)- ने अपने प्रेरणादायी अनुभव साझा करते हुए छात्रों के साथ संवाद किया। तकनीकी सत्र में 'कृषि शिक्षा में नवाचार, ग्रामीण आजीविका और जलवायु सहनशीलता' विषय पर डा. सीमा जग्गी, डा. के. पी. सिंह और डा. जितेंद्र कुमार ने अपने विचार रखे।

सम्मेलन के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रोटक्शन ऑफ प्लांट वैराइटीज एंड फार्मर्स राइट्स अथॉरिटी (पीपीवीएफआरए) के अध्यक्ष डा. त्रिलोचन महापात्रा के साथ वक्ताओं रूप में डा. राजबीर सिंह, डा. एस. के. सिंह तथा देवदत्त जोशी उपस्थित रहे। समापन अवसर पर नौ विषयों पर आधारित 18 सर्वश्रेष्ठ पोस्टर प्रेजेंटेशन और विभिन्न श्रेणियों में छात्रों को विशेष पुरस्कार प्रदान किए गए। एग्रीविजन का यह राष्ट्रीय सम्मेलन, युवा शक्ति को कृषि नवाचार, तकनीक और उद्यमिता से जोड़ते हुए विकसित भारत की दिशा में एक प्रेरणादायी पहल सिद्ध हुआ। इस आयोजन ने न केवल युवाओं को नेतृत्व और संवाद का अवसर प्रदान किया, बल्कि आत्मनिर्भर कृषि अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए सामूहिक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया। ■

। निसार मिशन ।

अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की एक और सफल उड़ान

भारत की अंतरिक्ष क्षेत्र में लगातार जारी प्रगति का एक बड़ा प्रतीक नासा-इसरो सिंथेटिक एपर्चर राडार या निसार मिशन बन गया है। गत 30 जुलाई को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से जियोसिनक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (जीएसलवी) रॉकेट की सफल उड़ान के साथ निसार उपग्रह को कक्षा में स्थापित कर दिया गया। यह सूर्य समकालिक ध्रुवीय कक्षा के लिए पहला जीएसएलवी मिशन भी था। यह उपग्रह 240 किलोमीटर चौड़े राडार क्षेत्र का उपयोग करके प्रत्येक 12 दिन में धरती का मानचित्र बनाएगा, जिसके माध्यम से हिमालय में ग्लेशियरों के पीछे हटने से लेकर दक्षिण अमेरिका में संभावित भू-स्खलन क्षेत्र पर बारीकी से नजर रखने के साथ ही आवश्यक आंकड़े उपलब्ध हो सकेंगे। यह आंकड़े वैज्ञानिकों एवं आपदा निरोधक एजेंसियों द्वारा किए जाने वाले अध्ययन में अपनी भूमिका का निर्वहन करेगें। दोहरी आवृत्ति वाले सिंथेटिक एपर्चर राडार उपग्रह को विकसित एवं प्रक्षेपित करने का काम भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) एवं नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया है। यह उपग्रह दोहरी आवृत्ति का उपयोग करने वाला पहला राडार इमेजिंग सैटेलाइट हैं, जिसका उपयोग पृथ्वी की प्राकृतिक प्रक्रियाओं को समझने के लिए होगा। यह पहला अवसर रहा, जब इसरो के जीएसएलवी यान ने किसी उपग्रह को सूर्य के चारों ओर ध्रुवीय कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित किया। यह उपग्रह भारत के राष्ट्रीय बुनियादी ढांचे की योजना बनाने में बेहतर, विज्ञान-संचालित निर्णयों के लिए आधारशिला के रूप में काम करेगा। 2,393 किलोग्राम वजन वाले इस उपग्रह को 747 किलोमीटर की सूर्य-समकालिक कक्षा में स्थापित किया गया है। निसार उपग्रह के लिए नासा ने एल-बैंड रडार, जीपीएस रिसीवर, उच्च-गति दूरसंचार प्रणाली, सॉलिड-स्टेट रिकॉर्डर और 12-मीटर का अनफर्लेबल एंटीना प्रदान किया है। इसरो ने एस-बैंड राडार, अंतरिक्ष यान बस, जीएसएलवी-एफ16 प्रक्षेपण यान और संबंधित प्रणालियां और सेवाएं प्रदान कीं है। इस मिशन की अनुमानित लागत 1.5 बिलियन डॉलर से अधिक है। इसका वित्तपोषण दोनों एजेंसियों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

देश के तीन सौ विश्वविद्यालयों में होगा अभाविप का विश्वविद्यालय प्रवास

भगवान बिरसा मुंडा सार्धशती और रानी अबक्का 500वी जयंती को लेकर बनी विशेष कार्ययोजना

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की दो-दिवसीय केंद्रीय कार्यसमिति बैठक पश्चिम बंगाल स्थित सिलीगुड़ी में संपन्न हुई। बैठक में शैक्षिक, सामाजिक, तकनीकी, पर्यावरण, खेलकूद एवं सेवा संबंधी विविध विषयों पर गहन विमर्श करके आगामी कार्ययोजनाओं को अंतिम रूप दिया गया। बैठक में समग्र शैक्षिक परिदृश्य को बेहतर बनाने और छात्रों के हितों को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

गत 2 एवं 3 अगस्त को आयोजित बैठक में देशभर के उच्च शिक्षण संस्थानों से जुड़े मुद्दों पर विशेष चर्चा की गई। शैक्षिक गुणवत्ता में गिरावट, विश्वविद्यालयों में कुलपतियों की शीघ्र नियुक्ति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन तथा विद्यार्थियों में आत्महत्या जैसी गंभीर समस्याओं की रोकथाम के लिए ठोस कदम उठाने पर विचार किया गया। साथ ही, पश्चिम बंगाल की जर्जर होती शिक्षा व्यवस्था, परिसरों में बढ़ती अराजकता, विद्यार्थियों के मौलिक अधिकारों का हनन तथा छात्राओं के विरुद्ध बढ़ते अपराधों को लेकर चिंता व्यक्त करते हुए समाधान के लिए प्रभावी उपायों की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

बैठक में भगवान बिरसा मुंडा जी की 150वीं जयंती के अवसर पर व्यापक स्तर पर जनजातीय छात्र सम्मेलन आयोजित करने, उनकी जन्मस्थली झारखंड के उलिहातू से देहरादून तक यात्रा निकालने तथा परिसरों एवं जनजातीय जिलों में जनजातीय छात्र सम्मेलन और नाट्य कार्यक्रम जैसे विविध आयोजन करने का निर्णय भी लिया गया। महारानी अबक्का की 500वीं जयंती पर देशभर के विभिन्न परिसरों में प्रदर्शनी और विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिनके माध्यम से उनके शौर्य एवं बलिदान की प्रेरणा विद्यार्थियों तक पहुंचाई जाएगी। इसी क्रम में आगामी 5 नवंबर से 20 नवंबर तक "सील यात्रा" (अन्तर राज्य-छात्र जीवन दर्शन) का आयोजन भी किया जाएगा। इस वर्ष शेष भारत के प्रतिनिधि उत्तर-पूर्व के प्रांतों में जाकर वहां की पारंपरिक विविधता को समझने तथा राष्ट्रीय एकात्मता के भाव को आत्मसात करने का प्रयास करेंगे।

बैठक में प्रा. यशवंत राव केलकर के जन्मशती वर्ष को विशेष रूप से मनाने का निर्णय भी लिया गया। प्रा. केलकर के विचारों को देश के युवाओं तक पहुंचाने और संगठनात्मक सुदृढ़ीकरण के लिए विशेष अभियान चलाए जाएंगे। बैठक में अभाविप के प्रमुख अभियान-'आनंदमयी सार्थक छात्र जीवन' और 'परिसर चलो' अभियान को निरंतर गतिशील बनाए रखने पर सहमति बनी। आपातकाल के 50 वर्ष पूर्ण होने पर गोष्ठियां, मीसाबंदी सम्मान समारोह और अनुभव कथन जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से आपातकाल की विभीषिका को समाज और विद्यार्थियों के सामने लाया जाएगा। संविधान के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर वर्षभर चलने वाली विशेष कार्ययोजना भी बैठक में निर्धारित की गई।

अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेंद्र सिंह सोलंकी ने बताया कि देश के प्रमुख तीन सौ विश्वविद्यालयों में छात्र पदाधिकारियों का अखिल भारतीय योजना के अंतर्गत प्रवास होगा और शेष विश्वविद्यालयों में प्रांतों की योजना के आधार पर प्रवास होगा। विभिन्न विधाओं के विश्वविद्यालयों जैसे-मेडिकल, कृषि विश्वविद्यालय एवं अखिल भारतीय संस्थानों में भी प्रवास होगा। उन्होंने बताया कि अभाविप की केंद्रीय कार्यसमिति बैठक में देश के शैक्षिक एवं सामाजिक परिदृश्य के विभिन्न पहलुओं पर गंभीर विमर्श कर ठोस कार्ययोजना तैयार की गई है। आगामी 28 से 30 नवंबर को देहरादून में आयोजित होने वाले अभाविप के 71वें राष्ट्रीय अधिवेशन की तैयारी प्रारंभ हो चुकी है, जो संगठनात्मक दृष्टि से ऐतिहासिक होगा। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

सिलीगुड़ी : केन्द्रीय कार्यसमिति बैठक का शुभारंभ करते हुए अभाविप राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान, राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही एवं राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेन्द्र सोलंकी।

सिलीगुड़ी : केन्द्रीय कार्यसमिति बैठक में विकासार्थ विद्यार्थी द्वारा आयोजित किए जाने वाले राष्ट्रीय पर्यावरण युवा संसद के पोस्टर का विमोचन करते हुए अभाविप एवं विकासार्थ विद्यार्थी के पदाधिकारी।

RNI NO.: DELBIL/2017/73636
DATE OF POSTING: 10-11 AUGUST, 2025
DATE OF PUBLISHING: 8 AUGUST, 2025

POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI
POSTING REGISTRATION NO. DL(C)-11/1409/2024-26

नई दिल्ली : एग्रीविजन राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए भा.कृ.अ. परिषद के महानिदेशक मांगीलाल जाट, अभाविप राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री गोविंद नायक, आर.पी.सी.ए.यू पूसा के कुलगुरु डा. पी. एस. पांडेय, आर.एल.बी.सी.ए.यू. झांसी के कुलगुरु डा. ए.के. सिंह, सी.ए.यू इम्फाल के कुलगुरु डा. अनुपम मिश्रा, अभाविप राष्ट्रीय मंत्री क्षमा शर्मा, एग्रीविजन सलाहकार परिषद सदस्य रघुराज किशोर तिवारी, संयोजक मनीष फाटे एवं अन्य।

नई दिल्ली : एग्रीविजन राष्ट्रीय सम्मेलन में आए देश के विभिन्न हिस्सों से प्रतिभागी।